Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَمِنۡہُمۡ مَّنۡ یَّقُوۡلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّفِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(सूरः बकरः आयत **:202**)

अनुवाद : और उनमें से कोई ऐसा भी है जो कहता है, "ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई अता कर और हमें आग की यातना से बचा।

वर्ष- 10
अंक - 35
मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

04 रबीउल् अव्वल , 1446-47 हिज्री कमरी, 28 ज़हूर1404 हिज्री शम्सी, 28 अगस्त 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन आदमी हैं जिनसे अल्लाह बात नहीं करेगा

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया: तीन आदमी हैं जिनसे अल्लाह बात नहीं करेगा और न उनकी तरफ देखेगा और न उन्हें पाक करेगा और उन्हें दर्दनाक अज़ाब होगा: एक वह शख्स जिसके पास ज़रूरत से ज़्यादा पानी हो और वह उससे मुसाफ़िरों को महरूम करता है, और वह शख्स जिसने किसी शख्स की बै'अत की और सिर्फ दुनिया ही की ख़ातिर बै'अत की। अगर उसने उसको जो वह चाहता है दे दिया तो उसका वफ़ादार रहा वरना उसने वफ़ादारी न की, और वह शख्स जिसने अस्र के बाद किसी शख्स से किसी सामान का भाव किया और अल्लाह की क़सम खाई कि इस चीज़ का इतना मुआवज़ा मिलता था और लेने वाला उस चीज़ को ले ले।

तशरीह: हज़रत सैय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब फ़रमाते हैं: अस्र का वक्त जो मुक़र्रर किया गया है उसका ज़्यादातर तअल्लुक़ नफ़्सियात से है। ज़वाल का वक्त झूठ और उसके बुरे प्रभाव से मअनवी मुनासिबत रखता है। क़ादियान में एक चोरी के इल्ज़ाम में लाला राम चंद साहिब थानेदार ने मुल्ज़िमीन को मुहलत दी और मुझसे बहैसियत नाज़िर उमूरे आमा इमदाद तलब की। मैंने मौलवी नज़ीर अहमद साहिब कारकुन नज़ारत उमूरे आमा से कहा कि रात के बार बजे मेरे मकान पर मुश्तबहीन को ले आएं और एक बड़ी ताक़त का बल्ब भी बहम पहुंचाया जाए। रात तारीक थी। दरअस्ल मुल्ज़िम जो शद्दो-मद्द से इल्ज़ाम का इन्कार करते थे, रात की तारीकी और यक-दम रोशनी से ऐसे मुतास्सिर हुए कि अपने जुर्म का इक़रार कर लिया और मसरूक़ा ज़ेवरात भी पेश कर दिए, जिस पर थानेदार ने चालान मुकम्मल किया। ग़रज़ हलफ़ के लिए नमाज़ अस्र के बाद की तख़्सीस उसी हिक्मत पर मबनी है कि वक्त और मुक़ाम का तअल्लुक़ नफ़्सियात से है।

हर चीज़ का सतून होता है, ज़िंदगी और सेहत का सतून खुदा तआला का फ़ज़ल है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

सौमे रमज़ान

फ़रमाया: रमज़ान का महीना मुबारक महीना है। दुआओं का महीना है।

फ़रमाया। "मेरी तो यह हालत है कि मरने के क़रीब हो जाऊं तब रोज़ा छोड़ता हूं। तबीयत रोज़ा छोड़ने को नहीं चाहती। यह मुबारक दिन हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल और रहमत के नुज़ूल के दिन हैं।"

सादगी

"याद रखो बच्चों की सी सादगी जब तक न हो उस वक्त तक इंसान नबियों का मज़हब इख़्तियार नहीं कर सकता है।"

ज़िंदगी का सतून

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तबीयत कुछ अलील थी। फ़रमाया:

"हर चीज़ का सतून होता है। ज़िंदगी और सेहत का सतून खुदा तआला का फ़ज़ल है।"

एक शख्स ने सुनाया कि मशहूर किताब-फ़रोशों के पास दूर-दूर से आपकी किताबों की मांग आती है। फ़रमाया:

"अल्लाह तआला ने जो हवा चलाई है। लोग अपनी-अपनी जगह तहक़ीक़ात में लगे हुए हैं।"

(मलफ़ूज़ात जिल्द 2, पृष्ठ 83 से 84, एडिशन 2018, क़ादियान)

मनुष्य को सभी प्रकार के व्यर्थ कार्यों से बचना चाहिए, अन्यथा उसका आध्यात्मिक जन्म पूर्ण नहीं हो सकता।

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः अल् मोमिनून आयत 13 से 17 की तफ्सीर में फ़रमाते हैं:

फ़रमाता है कि जिस तरह ये सात रूहानी पैदाइश के मरातिब हैं उसी तरह तुम्हारी जिस्मानी पैदाइश के भी अलग-अलग मरातिब हैं। सबसे पहले हम इंसान को मिट्टी के खुलासे से पैदा करते हैं अर्थात उस खुराक से जो मिट्टी से निकलती है जैसे नबातात, हैवानात और जमादात इत्यादि। यही हाल आलम-ए-रूहानियात का भी है। अर्थात जिस तरह नुत्फ़ा उन खुराकों के नतीजे में पैदा होता है जो ज़मीन से हासिल होती हैं उसी तरह रूहानियत का बीज भी उस वक्त तक पैदा नहीं हो सकता जब तक इंसान के अंदर खुश खुज़ू और फरोतनी की हालत पैदा न हो और किब्र और गुरूर का माद्दा उसके अंदर से न निकल जाए। फिर जब इंसान उस खुराक को खाता है जो मिट्टी में से निकलती है तो अल्लाह तआला उसे नुत्फ़ा बना कर एक ठहरने वाली जगह पर रख देता है जो जिस्मानी पैदाइश का दूसरा दर्जा है। रूहानी पैदाइश में इसके मुकाबिल पर وَالَّذِیۡنَ ہُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ (और वे लोग जो बेकार की बातों से दूर रहने वाले हैं) को रखा गया है और बताया गया है कि जिस तरह नुत्फ़ा की हिफ़ाज़त के लिए तरह-तरह की एहतियातों की ज़रूरत होती है वरना उसके ज़ाए होने का खतरा होता है, उसी तरह रूहानियत का बीज भी इस बात का तकाजा करता है कि इंसान हर किस्म के लग्व कामों से बचे वरना इंसान की रूहानी पैदाइश तकमील तक नहीं पहुंच सकती। फिर तीसरा दर्जा यह बताया कि हम नुत्फ़ा को अलक़ा बना देते हैं अर्थात वह एक जमे हुए लहू की तरह हो जाता है। रूहानी दरजात में इसके मुकाबिल पर وَالَّذِیۡنَ ہُمۡ لِلزَّکٰوۃِ فٰعِلُوۡنَ (और वे लोग जो जकात अदा करने वाले हैं) को रखा गया है। अर्थात जिस तरह नुत्फ़ा अलक़ा बन जाता है और रहम से चिमट जाता है उसी तरह रूहानी तरक्की करने वाला इंसान ऐसे मुकाम पर पहुंच जाता है कि बनी नौ इंसान की मोहब्बत उसके दिल में पैदा हो जाती है और वह बनी नौ इंसान की तरक्की के लिए अपने अमवाल खर्च करने लग जाता है। फिर चौथा दर्जा इंसानी पैदाइश का यह बयान फ़रमाया कि जमा हुआ लहू एक बोटी की शक्ल इख्तियार कर लेता है। अर्थात खून के लोथड़े में जो गंदगी पाई जाती है वह उससे बच जाता है। इसके मुकाबले में وَالَّذِیۡنَ ہُمۡ لِفُرُوۡجِہِمۡ حٰفِظُوۡنَ (और वे लोग जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले हैं) को रखा गया है। अर्थात वह अपने तमाम सुराखों की हिफाजत करने लग जाता है और अब उसका वजूद एक मुस्तकिल वजूद बन जाता है जो गंदगी से अपने आप को अपने इरादे से महफ़ूज़ रखता है। फिर पांचवां दर्जा यह बताया कि बोटी के बाद हड्डी जिस्म में बननी शुरू हो जाती है। इसके मुकाबले

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

मेरा सदैव यही विचार रहता है कि किसी मेहमान को तकलीफ न हो बल्कि इसलिए हमेशा ताकीद करता हूँ कि जहाँ तक हो सके मेहमानों को आराम दिया जाए। मेहमान का दिल आईने के समान नाज़ुक होता है और ज़रा सी ठेस लगने से दिल टूट जाता है।
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के जो मेहमान जलसा सुनने आ रहे हैं, उनकी हर तरह से सेवा और मेहमाननवाज़ी करना हर कार्यकर्ता, हर ड्यूटी देने वाले और हर उस अफ़सर का फ़र्ज़ है जो किसी भी महकमे या शाखा में काम कर रहा है।

इन दिनों में ख़ास तौर पर मेहनत, सब्र और दुआ से काम लें।

आप लोग यहाँ जलसा सुनने के लिए आए हैं इसलिए इस बात को अहमियत न दें कि आपके लिए इंतज़ाम सही हुआ है या नहीं हुआ। आपकी मेहमाननवाज़ी सही हुई है या नहीं हुई या किसी कार्यकर्ता ने कैसा रवैया अपनाया है। असल मक़सद तो रूहानी माएदे को हासिल करना है और आप लोगों को उसी के लिए कोशिश करनी चाहिए।

ऐसे मेहमान बनें जो बरकतें लाने वाले हों और ऐसे मेहमान न हों जो घर वालों के लिए परेशानी का बाइस हों बल्कि उन्हें परेशानी से निकालने वाले हों।

शामिल होने वाले और काम करने वाले सब अहमदी हैं और हम सब का मक़सद एक है कि हमने यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तालीम और इस्लाम की तालीम के मुताबिक़ अपनी अख़लाक़ी, रूहानी और इल्मी इस्लाह करनी है।

हमेशा याद रखें कि जलसे के मक़सद को आपने पूरा करना है और उन बरकतों को समेटने और उनसे अपनी झोलियाँ भरने की कोशिश करनी है जो बरकतें इस जलसे की हैं और जिनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस जलसे का आरंभ फ़रमाया था।

इस बात को ख़ास तौर पर हमें याद रखना चाहिए कि हमारा मक़सद अपनी इस्लाह करना है। अपने दीनी इल्म को बढ़ाना है। अपनी रूहानी हालत को बेहतर करना है और इसके लिए हमने भरपूर कोशिश करनी है। अख़लाक़ी तौर पर अपनी हालत को बेहतर करना है।

इस साल भी अलग-अलग शाखाओं की नुमाइशें हैं और अच्छी मालूमाती और इल्म में इज़ाफ़ा का ज़रिया हैं, दिलचस्प हैं। उन्हें भी देखने की कोशिश करें।

जलसा सालाना ब्रिटेन 2025 की मुनासिबत से कार्यकर्ताओं और मेहमानों को ज़र्रीन नसीहतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 जुलाई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज शाम से, इंशाअल्लाह, जलसा सालाना ब्रिटेन की कार्यवाही बाकायदा रूप से शुरू हो जाएगी। यह सभा, जैसा कि हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें जमाअत की इल्मी, नैतिक व आध्यात्मिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अनेक कार्यक्रम होते हैं। अल्लाह तआला सभी भाग लेने वालों को इससे भरपूर लाभ उठाने की तौफ़ीक़ अता करे। इस समय मैं

जलसा में ड्यूटी देने वालों और भाग लेने वालों से कुछ बातें

करना चाहता हूँ। इस्लाम में मेहमान की इज़्ज़त व सम्मान की विशेष रूप से ताकीद की गई है। स्वयं पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसकी बहुत ताकीद की है।

आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया, "मेहमान को उसका जायज़ हक़ दो।"
(मुस्लिम, किताबुल-ईमान, बाबुल-हथ-अला-इकरामिल-जार वज़्ज़ैफ... हदीस 47)

और यह जायज़ हक़, परिस्थितियों के अनुसार, कुछ दिनों की मेहमाननवाज़ी है। आप (स.अ.व.) की इसी शिक्षा के असर से सहाबा (र.अ.) अपनी कुर्बानी देकर भी मेहमाननवाज़ी करते थे। उन शुरुआती दिनों में सहाबा के हालात ऐसे नहीं थे कि आसानी से पेट भर खाना भी मयस्सर हो।

सहाबा (र.अ.) अपना व अपने बीवी-बच्चों का पेट काटकर, अपना अधिकार छोड़कर, अतिथियों की सेवा करते थे।

इस संबंध में एक मशहूर घटना है कि एक सहाबी के घर खुद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) द्वारा भेजे गए मेहमान आए। जब जानकारी ली गई, तो पत्नी ने कहा कि घर में सिर्फ बच्चों के लिए थोड़ा खाना है। तब उन्होंने मेहमान की ख़ातिर बच्चों को समझाकर सुला दिया और मेहमान को घर ले आए। खुद भी दीपक बुझाकर खाना नहीं खाया, बल्कि मेहमान के सामने यूं जताया कि खुद भी खा रहे हैं। खुद भी भूखे सो गए और बच्चे भी भूखे रहे। अल्लाह तआला ने इस अमल को पसंद करते हुए इसकी सूचना पैग़म्बर (स.अ.व.) को दी। जब अगली सुबह वह सहाबी आपके पास

गए तो आपने फ़रमाया “तुमने जो रात को मेहमान को खाना खिलाया और जो उपाय किए उससे अल्लाह तआला बहुत ख़ुश हुआ।” यही है अतिथि सेवा का दर्जा।

(मुस्लिम, किताबुल-अशरिबा, बाब इकरामिज़-ज़ैफ व फ़ज़्ल-ए-इसारह, हदीस नंबर 2054)

अतः आजकल इन दिनों में हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम के जो मेहमान जलसा सुनने आ रहे हैं, उनकी हर तरह से सेवा और मेहमाननवाज़ी करना हर कर्मी, हर ड्यूटी देने वाले व प्रत्येक अधिकारी का कर्तव्य है, जो किसी भी विभाग या शाखा में काम कर रहा है। इन दिनों में ख़ास तौर पर मेहनत, सब्र और दुआ से काम लें।

यदि मेहमानों की तरफ़ से कभी कोई कड़ी बात भी सुनने को मिले तो उच्च नैतिकता का प्रदर्शन करते हुए अल्लाह तआला की रज़ा के लिए उसे नज़रअंदाज़ करें। यहाँ विभिन्न विभाग हैं। मैंने पिछले ख़ुत्बे में भी संक्षेप में कहा था कि हर विभाग का अधिकारी एवं उसके सहायक अपने कर्तव्य ख़ुशी व अच्छा व्यवहार रखते हुए निभाएँ। हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम के इस संबंध में कई वाक्यात मिलते हैं। आप विशेष तौर पर यह हिदायत दिया करते थे कि मेहमानों के साथ कैसा व्यवहार करना है। आपके निर्देश और घटनाएँ आपकी जीवनी की विभिन्न पुस्तकों में जगह-जगह अलग-अलग तरह से वर्णित हैं।

आसाम से आए मेहमानों की सेवा का भी एक प्रसिद्द प्रसंग है कि आपने किस प्रकार उनकी देखभाल की। यह घटना हम सुनते हैं और इससे आनंदित होते हैं कि हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस तरह इनका ख़्याल रखा; लेकिन

यह पूरी टीम, समस्त ड्यूटी देने वालों और उन सभी के लिए भी एक सबक़ है, जो हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा का अवसर पाते हैं।

घटना यूँ है कि एक बार आसाम से कुछ मेहमान आए। जब वे लंगरखाने पहुंचे और सवारी से उतरे तथा कहा गया कि सामान उतारो, तो लंगरखाने के कर्मचारियों का व्यवहार कुछ ठीक नहीं था। इस पर वे नाराज़ हो गए और वही टांगे पर बैठ कर लौटने लगे, जिस पर आए थे। जब हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम को इसका पता चला, तो आप बहुत नाराज हुए कि ऐसी परिस्थिति क्यों बनी कि मेहमान नाराज होकर चला गया। आप फौरन घर से निकले, इतनी जल्दी थी कि जूते भी ठीक से पहनना मुमकिन नहीं था, और उनके पीछे तेज़-तेज़ कदमों से चल पड़े। जबकि मेहमान टांगे पर बैठ चुके थे और घोड़ा-गाड़ी काफी दूर निकल चुकी थी, आप पैदल ही तेज़ी से उनके पीछे गए। वर्णन है कि क़ादियाँ के पास से गुजरने वाली नहर के पुल तक पहुँच कर आपने उन्हें रोक लिया। फिर उन्हें वापस लाए। जिस अद्भुत तरीके से उन्हें वापस लाया, उसमें भी मेहमान का सम्मान झलक रहा था। आपने मेहमानों से कहा कि आप सवारी पर बैठे रहें, टांगे पर रहिए, मैं पैदल आपके साथ चलूँगा।

आपके इस उच्च आचरण को देख मेहमान भी शर्मिंदा हो गए और बोले, “हम टांगे पर बैठकर नहीं चल सकते, हम भी आपके साथ पैदल चलेंगे।” वे बार-बार यही कहते रहे, “हुज़ूर, हम नहीं बैठेंगे, हम आपके साथ ही चलेंगे।”... खैर, वापस कादियाँ आ गए। लंगरखाने पहुँचे, तो आपने स्वयं मेहमानों का सामान उतारने के लिए आगे हाथ बढ़ाया, पर कर्मचारियों को अपनी गलती का एहसास हो चुका था, वह बहुत शर्मिंदा थे, इसलिए फौरन आकर स्वयं सामान उतारने लगे। फिर उन लोगों के भोजन का भी, चूँकि वे आसाम के निवासी थे, हज़रत मसीह-मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके लिए विशेष भोजन की व्यवस्था की।

(स्रोत: 'सीरतुल महदी, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब, एम.ए., भाग चौथा, पृष्ठ 56-57, रिवायत 1069)

यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूँ कि लंगरख़ाने के संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो यह निर्देश है कि ऐसे मेहमानों की मेहमाननवाज़ी की जाए, वहीं यह भी हिदायत है कि जलसा के दौरान एक ही प्रकार का भोजन पकाया जाए, जो सब मेहमानों को दिया जाए, क्योंकि वहाँ लोग काफ़ी तादाद में होते हैं, अतः विभिन्न व्यवस्थाएँ कठिन हो जाती हैं।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद, हज़रत याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब, पृष्ठ 149)

इसी प्रकार, मेहमाननवाज़ी की एक और मिसाल हज़रत मुफ़्ती मोहम्मद सादिक़ साहिब ने बयान की है। वह कहते हैं - मुझे याद है कि एक बार मैं लाहौर से क़ादियाँ आया हुआ था। शायद 1897 या 1898 की बात होगी। मुझे हज़ूर ने मस्जिद मुबारक में बिठाया, जो उस समय एक बहुत ही छोटी जगह थी। बाद में इसका विस्तार हुआ, तो मस्जिद थोड़ी सी बड़ी हुई थी, उसे बड़ा किया गया था। आपने फ़रमाया कि आप यहाँ बैठिए, मैं आपके लिए खाना लाता हूँ। यह कहकर आप अंदर चले गए। मुफ़्ती साहिब कहते हैं कि मेरा ख्याल था कि आप किसी ख़ादिम के हाथ खाना भिजवा देंगे, मगर कुछ ही मिनटों बाद जब खिड़की खुली जो मस्जिद और आपके घर के बीच की दीवार में थी, और उसमें खिड़की जैसा एक छोटा द्वार था तो मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुद अपने हाथ में खाने की ट्रे उठाए मेरे लिए खाना लाए। मुझे देख कर फ़रमाया, आप खाना खाइये, मैं अभी पानी लाता हूँ। मुफ़्ती साहिब कहते हैं, उस समय मैं इतनी भावुकता से भर गया कि मेरे आँसू निकल पड़े कि जब हमारे रहबर और पेशवा ख़ुद हमारे लिए यह सेवाकर रहे हैं, तो हमें भी आपस में एक-दूसरे की सेवा किस पैमाने पर करनी चाहिए।

(स्रोत: 'ज़िक्र-ए-हबीब', मुफ़्ती मोहम्मद सादिक़ साहिब, पृष्ठ 327)

यह एक आदर्श था, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी में ऐसी अनेक अतिथि-सेवा की घटनाएँ बिखरी हैं। आपने एक बार फ़रमाया

"मेरा सदा ख्याल रहता है कि किसी मेहमान को तकलीफ़ न हो, बल्कि मैं इसीलिए हमेशा ताकीद करता हूँ कि जहाँ तक हो सके, मेहमानों को आराम मिले। मेहमान का दिल शीशे की तरह नाज़ुक होता है और थोड़ी सी ठेस भी उसे तोड़ देती है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 111, एडिशन 2022)

फिर आपने फ़रमाया कि कुछ मेहमान बहुत जज़्बाती होते हैं, ख़ास तौर से जैसे मैंने अभी आसाम के लोगों की मिसाल दी। अलग-अलग क़ौमों के तौर-तरीके और हालात होते हैं। कुछ बहुत जल्दी भावुक हो जाते हैं और ग़ुस्से में भी आ जाते हैं। आपने फ़रमाया, यह मत सोचो कि वे जज़्बाती क्यों हुए या ग़ुस्से में क्यों आए। मेहमान का दिल शीशे की तरह होता है, वह आइने की तरह टूट सकता है। इसलिए, इससे पहले कि उसे ठेस लगे और वह टूटे, उसकी सुरक्षा के इन्तज़ामात करो।

इस प्रकार, यही वह आदर्श और शिक्षा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आक़ा व नेता की पैरवी में हमें मेहमानों के समुचित आदर-सत्कार के संबंध में सिखाई। एक घटना यह भी मिलती है कि एक बार बहुत से मेहमान आए हुए थे। आपने लंगरख़ाने के इंचार्ज मियाँ नज्मुद्दीन को कहा

"देखो, बहुत से मेहमान आए हुए हैं, उनमें से कुछ को तुम पहचानते हो और कुछ को नहीं। कुछ को जानते हो और कुछ को नहीं। इसलिए यह उचित है कि सबका सम्मान करो और सभी का आदर पूर्वक सत्कार करो।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 353, एडिशन 2022)

सभी की इज्जत और सम्मान जरूरी है। यह नहीं देखना कि कौन गरीब है या अमीर है, कोई अमेरिका से आया या पाकिस्तान से, अफ़्रीका से है या किसी और देश से, या यहीं का रहने वाला है। आजकल यह ख़याल रखना चाहिए कि सब मेहमान हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आमंत्रण पर जलसा में शरीक होने आए हैं इसलिए, उनका सम्मान, अभ्यर्थना, आतिथ्य और आवश्यकताओं का ध्यान रखना जरूरी है।

तो देखिए, आपने किस तरह मेहमानों की सेवा की सलाह दी। आपने अपने कर्मचारियों से यह भी कहा कि मुझे तुम पर नेकगुमान है कि तुम मेहमानों की सही तरीके से सेवा करते होगे और करते रहोगे। हर कर्मचारी को प्रयास करना चाहिए कि जिस जगह व विभाग में उसकी ड्यूटी है, वहाँ वह मेहमानों की सेवा का पूरा हक अदा करे, चाहे वह भोजन-सेवा मंडप हो या अन्य कोई स्थान। जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया, अलग-अलग विभाग हैं टिकट बनाने से लेकर जलसा-गाह तक के सभी विभागों में मेहमानों का कर्मचारियों से वास्ता पड़ता है, वहाँ हर कर्मचारी को ख़ुश-आमिज़ाज और अच्छे संस्कार का प्रदर्शन करना चाहिए। भोजन पकाने और सेवा के विभाग में भी मेहमाननवाज़ी का हक अदायगी जरूरी है, क्योंकि यह आतिथ्य का अहम हिस्सा है। प्रयत्न यह हो कि मेहमानों को न सिर्फ पेट भर खाना मिले, बल्कि सम्मान से मिले। लंगरख़ाने में काम करने वालों को उत्तम किस्म का खाना पकाने की कोशिश करनी चाहिए और अल्लाह के फ़ज़्ल से वे ऐसा करते भी हैं, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ज़रूरत के अनुसार भोजन उपलब्ध हो, ताकि कमी न पड़े।

साफ़-सफ़ाई के विभाग पर भी भरपूर ध्यान देना चाहिए। स्वच्छता भी ईमान का हिस्सा है यह कोई मामूली बात नहीं।

पैग़ाम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “स्वच्छता ईमान का हिस्सा है।”

(मुस्लिम, किताबुत्तहारा, बाब फ़ज़्लुल वुज़ू, हदीस 223)

इसलिए इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस बात में वातावरण की सफ़ाई भी शामिल है और हमारे अन्य जो प्रबंध हैं, जैसे स्नानघर आदि, उनकी सफ़ाई भी सम्मिलित है।

जलसा-गाह में, फिर विभिन्न कार्यक्रमों के लिए लोगों को लाते समय, जो

कार्यकर्ता हैं, वे नरमी और प्यार से उन्हें ध्यान दिलाएं। कुछ लोगों को पूरी समझ नहीं होती और वे पूरी तरह जलसा नहीं सुनते। यहाँ जो बैठे हैं, अनुशासन वाले हैं – औरतें भी, पुरुष भी – उन्हें चाहिए कि कोशिश करें कि उन लोगों को प्यार और नरमी से समझाएं। तालीम-ओ-तर्बियत का विभाग भी इसलिए काम कर रहा होता है कि वे लोगों को जलसा-गाह में बैठाकर भाषण सुनें। इस समय बाजार भी बंद होंगे और होने चाहिए। बहरहाल, हर जगह यह ध्यान रखना है कि कर्मचारी इन दिनों में अच्छा आचरण और श्रेष्ठ व्यवहार का विशेष नमूना दिखाएं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो उन्हें अच्छा समझा है, उस पर पूरा उतरने की कोशिश करें।

इसी तरह, मैं कुछ बातें मेहमानों से भी कहना चाहता हूँ। यद्यपि कुछ गैर-जमाअत मेहमान भी यहाँ आते हैं लेकिन उनके लिए एक अलग विभाग बनाया गया है और उनकी विशेषत: मेहमाननवाज़ी की जाती है, क्योंकि वे गैर हैं। लेकिन उन कुछ के अलावा, बाकी सभी मेहमान, जिनमें अधिकतर जमाअत-अहमदिया के सदस्य हैं

आप लोग यहाँ जलसा सुनने के लिए आए हैं, इसलिए इस बात को महत्व न दें कि व्यवस्थाएँ आपके अनुसार ठीक हुई हैं या नहीं, आपकी मेहमाननवाज़ी ठीक हुई है या नहीं, या किसी कार्यकर्ता ने कैसा व्यवहार किया है। असली उद्देश्य तो आत्मिक भोजन प्राप्त करना है और उसी के लिए आपको प्रयास करना चाहिए।

यद्यपि मेज़बानों को, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, मेहमाननवाज़ी का हक़ अदा करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और वे करते भी हैं, लेकिन इस तरह, भाग लेने वालों का भी यह कर्तव्य है कि

यदि कर्मचारियों में कोई कमजोरी, कमी या त्रुटि रह गई हो तो उसे नज़रअंदाज़ करें।

इनमें से जो व्यक्ति सफ़ाई के विभाग में हैं, वे कोई प्रशिक्षित लोग तो नहीं हैं; या जो अनुशासन के विभाग में ड्यूटी करते हैं, वे कोई पुलिसकर्मी तो नहीं हैं; जो गेट पर ड्यूटी दे रहे हैं, वे भी प्रशिक्षित कर्मचारी नहीं हैं; या जो ट्रैफिक नियंत्रित कर रहे हैं, वे भी प्रशिक्षित पुलिसकर्मी नहीं हैं। ये सभी लोग स्वेच्छा से, मेहमानों की सेवा के लिए स्वयं को प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें से कुछ सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थी हैं, कुछ विश्वविद्यालय के युवा छात्र हैं, कुछ अन्य पेशों से जुड़े लोग हैं और कुछ अच्छे पेशों वाले लोग हैं। ये सभी एक जज़्बे से काम कर रहे हैं कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करनी है।

अतः! उनके भाव को समझते हुए, उनसे पूरा सहयोग करें और उनकी कमज़ोरियों को नज़रअंदाज़ करें। जब आप ऐसा करेंगे, तो आप उस मकसद को पा सकेंगे जिसके लिए आप यहाँ आए हैं, और आपसी संबंधों में भी और अच्छाई पैदा होगी।

सभी मेहमानों को यह चिंतन करना चाहिए कि उनकी यहाँ आने की मंशा क्या है, और वह मंशा सर्वोच्च नैतिकता और अल्लाह तआला को याद करने से ही पूरी हो सकती है।

खाना-खिलाने की मार्की में हर मेहमान का कर्तव्य है कि भोजन के बाद तुरंत मार्की खाली कर दें ताकि अन्य लोग भी आकर भोजन कर सकें। कभी-कभार स्थान कम और मेहमान ज़्यादा होते हैं, इसलिए बारी-बारी या शिफ्ट में भोजन करवाना पड़ता है। अतः, इस बात का ध्यान रखें कि खाना खाते ही मार्की से निकलने का प्रयास करें, न कि वहीं खड़े होकर बातों में लग जाएँ। बाहर आकर आप बातें करना चाहें तो कर सकते हैं। इसी तरह, कर्मचारी प्लेटों में भोजन देते हैं। यदि आप मांग करें तो, जैसा कि उन्हें कहा गया है, वे आपको मांग के अनुसार खाना देंगे, लेकिन भोजन बर्बाद न करें। रोज़ी-रोटी का हमेशाः सम्मान करना चाहिए। कुछ लोग यदि थोड़ी सी रोटी जली या कच्ची हो तो उसे निकालकर फेंक देते हैं, जबकि अगर वह खाने योग्य है तो उसे खाना चाहिए सिवाय इसके कि कोई बीमार हो और उसके लिए वह नुक़सानदेह हो। सामान्यतः मशीन से रोटी अच्छी ही बनती है, मैंने खुद जांची है, लेकिन कभी-कभी खराब रोटी भी आ जाती है। जब तक रोटी बहुत ज़्यादा न जली हो या बहुत कच्ची न हो, उसे बर्बाद करने से बचें। ऐसे ही सब्ज़ी आदि को भी बर्बाद करने से बचाएँ। एक तो यह रोज़ी की बर्बादी है जो नहीं होनी चाहिए दूसरे, वही भोजन किसी और को काम आ सकता है।

दूसरा मुद्दा यह भी होता है कि जो खाना प्लेटों में बहुत अधिक बच जाता है, उसे कचरे में फेंकना या उसका निपटान करना बहुत कठिन हो जाता है। इससे सफ़ाई के विभाग पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है और उन्हें बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता है। इसलिए,

मेहमानों को चाहिए कि जलसा सालाना के इन दिनों में भोजन को बरकत समझकर खाएँ और उसे ज़ाया (बर्बाद) न करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मिसाल यह है कि एक बार आपके खाने का इंतज़ाम न हो सका और जिम्मेदार लोग भूल गए, और आप भी व्यस्त थे। जब आपने अपने खाने के बारे में पूछा तो सब चिंता में पड़ गए, क्योंकि खाना खत्म हो चुका था। आपने फ़रमाया, "कोई बात नहीं। दस्तरख्वान पर जहाँ लोगों ने खाना खाया है, वहाँ जो रोटियों के छोटे टुकड़े और बचा हुआ सालन है, वह ले आओ, मैं वही खा लूँगा।"

इस तरह आपने वही बचे हुए टुकड़े जो लोग छोड़कर गए थे ख़ुशी से खा लिए।

(स्रोत: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब, पृष्ठ 322)

यह आपका उत्तम आदर्श (उसवा-ए-हसनह) है, जो आपने हमारे लिए स्थापित किया। अतः

हमेशा इस बात का ख्याल रखें कि हमें रोज़ी-रोटी को बर्बाद होने से बचाना है, और इस प्रकार सफ़ाई का काम करने वालों के लिए भी आसानी पैदा करनी है।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "भोजन को ज़ाया मत करो।"

(स्रोत: सुनन-अत्तिर्मिज़ी, किताबुल अतइमा, बाब मा जा' फी लुक्माह तसकुत, हदीस 1803; सुनन इब्न माजह, किताबुल अतइमा, बाब नह्य अन इल्काइ अत-तआम, हदीस 3353)

भोजन की कदर करते हुए उसे खाओ, और जो पेश किया जाए उसे ख़ुशी से स्वीकार करो। निःसंदेह आपका यह निर्देश विशेष रूप से मेहमानों के लिए है, ताकि वे उस पर अमल करें और अपने साथ बर्कतें (बरकतें) लेकर जाएँ; लेकिन इस का प्रमाण देने के लिए हर मेहमान को उसका उदाहरण बनना चाहिए।

ऐसे मेहमान बनें जो बरकतें लेकर आते हों, और ऐसे नहीं कि घरवालों के लिए परेशानी का कारण बनें, बल्कि वे मेहमान बनें जो मेज़बानों की कठिनाइयाँ दूर करने वाले हों।

हम यहाँ आए हैं तो जुलसे की व्यवस्था के तहत सब काम हो रहा है, कर्मचारी अपनी ड्यूटी कर रहे हैं; लेकिन

चाहे मेज़बान हों या मेहमान सभी अहमदी, हम सभी का एक ही उद्देश्य है: कि हम यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और इस्लाम की शिक्षा के अनुसार अपनी नैतिक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक सुधार करें।

चाहे ड्यूटी देने वाले हों या मेहमान हर किसी को इसके लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

कभी-कभी ऐसे हालात बन जाते हैं कि खाने में कमी हो जाती है। कार्यकर्ता और लंगरख़ाना हमेशा यही प्रयास करते हैं कि भोजन में कोई कमी न हो, परंतु कभी-कभी बड़े जमघट में हिसाब गलत हो जाता है और कमी आ भी सकती है।

ऐसी स्थिति में हमें पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हिदायत याद रखनी चाहिए

"दो व्यक्तियों का भोजन तीन के लिए पर्याप्त है, और तीन का भोजन चार के लिए पर्याप्त है।"

(मुस्लिम, किताबुल-अशरिबा, बाब फ़ज़ीलतुल-मुवासात फी अत-तआमिल कलील, हदीस 2058)

एक दूसरी रिवायत में इस प्रकार आता है कि एक आदमी का खाना दो के लिए, दो का चार के लिए, और चार का आठ के लिए काफ़ी है।

(मुस्लिम, किताबुल-अशरिबा, बाब फ़ज़ीलतुल-मुवासात फी अत-तआमिल क़लील, हदीस 2059)

इसलिए, हमें इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए।

एक बात जो मैं पहले भी कह चुका हूँ, वह यह है कि ड्यूटी करने वालों के लिए भी सुविधा पैदा करनी चाहिए।

खाना खाने की मार्की और अन्य स्थानों पर भी सफ़ाई का ध्यान रखें। सफ़ाई के मामले में भी यही बात ध्यान रखें कि काम करने वालों के लिए आसानी हो। सड़कों और रास्तों पर गंदगी न डालें, इसमें भी इस बात का ध्यान रहे। कुछ लोग बाजार से चीज़ें खरीदकर खाते हैं; जहाँ भी बैठकर खाएँ, उनके खाली पैकेट और लिफाफे इधर-उधर फेंकने के बजाए कूड़ेदान में डालें ताकि सफ़ाई करने वाले आसानी से काम निपटा सकें और कम समय में ज़्यादा काम कर प्रशासन को सुचारू रूप से चला सकें।

फिर यह भी है कि हर तरफ से उत्तम आचरण का प्रदर्शन होना चाहिए।

मैंने कर्मचारियों से भी कहा है और मेहमानों को भी चाहिए कि उच्च नैतिकता

का प्रदर्शन करें। एक हदीस में आता है कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह अच्छी बात कहे या चुप रहे।"

(मुस्लिम, किताबुल-ईमान, हदीस 47)

अतः, यदि कभी नाराज़गी की कोई स्थिति उत्पन्न हो भी जाए, तो ग़ुस्सा करने या बदतमीज़ी के प्रदर्शन के बजाय खामोशी इख्तियार करें और इस्तिगफार करें, दुआ पढ़ें।

इसी तरह, बच्चों के खाने के संबंध में भी बता दूँ यहाँ भी ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी लोग बच्चों को प्लेट भरकर खाना दे देते हैं, और बच्चे उतना खा नहीं पाते, जिससे खाना बर्बाद हो जाता है। तो यहाँ भी, जैसा कि मैंने पहले कहा है, खाना बर्बाद होने से बचाएँ बच्चों को थोड़ा-थोड़ा कर के दें, चाहे बार-बार डालना पड़े।

हमेशा याद रखें कि जलसा के उद्देश्य को आपको पूर्ण करना है और उसकी बरकतों को समेटने व उनसे अपनी झोलियाँ भरने की कोशिश करनी है, जो इस जुलसे से मिलती हैं और जिनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसका आयोजन किया था।

आपने एक अवसर पर फ़रमाया था कि जुलसे मे बैठकर इत्मीनान से सुनो, और केवल भाषणों की अच्छाई-बुराई या प्रस्तुतकर्ता पर ध्यान न दो, बल्कि इस बात पर ध्यान दो कि जो बातें प्रस्तुत की जा रही हैं, वे अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के मुताबिक़ हैं या नहीं और हमें उन पर अमल की कोशिश करनी है, न कि यह कौन बोल रहा है और किस तरह।

आप फ़रमाते हैं:

"सभी सज्जनों को चाहिए अच्छी तरह ध्यान देकर सुनें। मैं अपनी जमाअत और अपने आप के लिए यही चाहता और पसंद करता हूँ कि भाषणों में जो बाहरी शोर-शराबा या बातों का तड़क-भड़क होता है, बस वही पसंद का विषय न बने और पूरी उद्देश्यशीलता इस पर न ठहर जाये कि बोलने वाले की कितनी जादू-भरी तक़रीर है, कितने ज़ोरदार शब्द हैं। मैं इससे प्रसन्न नहीं होता। मैं तो यही पसंद करता हूँ, बनावटीपन और बनावट से नहीं, बल्कि मेरी स्वाभाविक प्रकृति और फ़ित्रत इसी की मांग करती है कि जो काम हो वह अल्लाह के लिए हो, जो बात कही जाए वह ख़ुदा के वास्ते कही जाए।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 360, संस्करण 2022)

और आपने यह भी फ़रमाया कि मुसलमानों में पतन का कारण यह बना है कि वे बड़ी-बड़ी कॉन्फ्रेंस और सभाएँ करते हैं, बैठकें होती हैं, और बड़े-बड़े तर्कशील भाष्यकार अपने भाषण देते हैं। शायर अपनी क़ौम के लिए कविताएँ पढ़ते हैं, उन बातों पर नारे भी लगते हैं, मगर बाद में उसका कोई असर नहीं होता और जमाअत केवल उन्हीं नारों के कारण ही पतन का शिकार हो जाती है।

(स्रोत: मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 362, एडिशन 2022)

अतः यही वह शिक्षा है और यही वह सच्ची निष्ठा का स्तर है जिसे हर व्यक्ति, हर अहमदी के आगे होना चाहिए; कि केवल नारे लगाने या पसंद के लिए बातें न सुनी जाएँ, बल्कि अल्लाह और रसूल के वास्ते उस पर अमल के इरादे से बातें सुनी जाएँ, और इसी उद्देश्य से हर अहमदी को यहाँ आना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आप इसी उद्देश्य से आए होंगे। जैसा कि आपने फ़रमाया है: "जो काम हो, वह अल्लाह के लिए हो और जो बात हो, वह भगवान के वास्ते हो।" हर किसी को इस सिद्धांत को अपनी आंखों के सामने रखना चाहिए। इसके अलावा, यह भी याद रखें कि हमें अपने दिन अल्लाह के ज़िक्र (स्मरण) में बिताने चाहिए।

जलसा सुनते हुए भी अपनी ज़ुबान को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखिए। बाद में चलते-फिरते, मिलते-जुलते, जब लोगों से बातचीत करें, तब भी केवल धार्मिक बातें हों। अल्लाह के ज़िक्र की बातें हों। क़ुरआन, हदीस, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्देश्यों से संबंधित बातें हों। अल्लाह के स्मरण और दीन के लिए दुआओं की ओर ध्यान दें।

ज़िक्र-ए-इलाही ही है जो इंसान के विचारों को भी पाक बनाता है और उसे अल्लाह तआला के विशेष अनुग्रह का वारिस बनाता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जगह बहुत सुंदर रूप में कहा है

कि "अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है: 'ज़िक्र-ए-इलाही करो, और ख़ास तौर पर जब बैठकें हों, तो उनमें ज़िक्र-ए-इलाही करो।' तो इसका लाभ अल्लाह तआला ने यह बताया है:

'उज़्कुरुल्लाहा यज़्कुरकुम' कि यदि तुम अल्लाह का ज़िक्र करोगे, तो अल्लाह तआला तुम्हारा ज़िक्र करने लगेगा।

तो जिस बंदे का ख़ुदा ज़िक्र करता है, उससे बढ़कर खुशकिस्मत कौन हो सकता है, जिसे उसका मालिक याद करे, बुलाए।

ज़िक्र-ए-इलाही तो बहुत बड़ी नेमत है। आप नसीहत करते हुए कहते हैं "तुम्हें कोई इनाम मिले या न मिले, मगर तुम ज़िक्र-ए-इलाही में मसरूफ़ हो जाओ। अल्लाह तआला तुमसे राज़ी हो जाएगा और फिर वह तुम्हें याद रखेगा।"

(स्रोत: ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 4, पृष्ठ 258 ख़ुत्बा जुमा, 25 दिसंबर 1914)

और जब अल्लाह तआला याद करता है, तो वह बिना इनामों के नहीं छोड़ता, बल्कि अपने इनामों से भी नवाजता है। अतः अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को आकर्षित करने के लिए इन ख़ास दिनों में इन बातों को विशेष रूप से याद रखें और उनकी ओर ध्यान दें।

हर शामिल होने वाला और हर कार्य करने वाला सभी को चाहिए कि वे इन बातों की ओर ख़ास ध्यान दें कि हमें अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखना है। जब यह होगा तो फिर एक ऐसा माहौल जन्म लेगा, जो निश्चित ही वही माहौल है, जिसके लिए यह जलसा आयोजित किया जा रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

''सबको ध्यान लगाकर सुनना चाहिए और पूरे मनन और विचार के साथ सुनो, क्योंकि यह मामला ईमान का है। इसमें ग़फ़लत, सुस्ती और लापरवाही बहुत बुरे परिणाम पैदा करती है। वे लोग जो ईमान में लापरवाही करते हैं और जब उन्हें संबोधित करके कुछ बताया जाता है तो वे ध्यान से नहीं सुनते उन्हें वक्ता की बात, चाहे वह कितनी उच्च-कोटि की, लाभकारी और प्रभावशाली ही क्यों न हो, उससे कोई फायदा नहीं होता। ऐसे ही लोग होते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके पास कान हैं पर वे सुनते नहीं, दिल हैं पर समझते नहीं। अतः ध्यान रहे कि जो कुछ बयान किया जाए, उसे विशेष ध्यान और गहराई से सुनो, क्योंकि जो ध्यान से नहीं सुनता, वह चाहे कितने ही समय तक लाभकारी सोहबत में रहे, कुछ भी लाभ नहीं उठा सकता।''

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 479, एडिशन 2022)

इन तीन दिनों में लाभ तभी मिलेगा, जब हम बातें ध्यान से सुनें, उन पर अमल करने का संकल्प करें, और इस उद्देश्य के लिए अपने दिलों को पवित्र रखने के लिए अपने ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखें। जुलसे में बैठकर भी लगातार अल्लाह का ज़िक्र, दुआ, और दरूद पढ़ते रहें तब भाषणों का विशिष्ट प्रभाव आप पर अवश्य होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में अत्यंत चिंता प्रकट की है कि यदि तुम जलसे की कार्यवाही ध्यान से नहीं सुनते, तो जलसे पर आने का कोई लाभ नहीं।

हमें विशेष रूप से इस बात को याद रखना चाहिए कि हमारा उद्देश्य अपनी स्वयं की सुधार है, अपने धार्मिक ज्ञान को बढ़ाना है, अपनी आध्यात्मिक दशा को सुधारना है, और इसके लिए हमें पूरी कोशिश करनी है। नैतिक रूप से भी अपने हालात को बेहतर बनाना है।

अपने दोस्तों और भाइयों के लिए त्याग की भावना पैदा करनी है और हृदय की रंजिशों को दूर करना है यह भी एक बड़ा उद्देश्य है। यह जो परिवेश बना है, जिसमें हज़ारों लोग इकट्ठा हैं, यह भी वही वातावरण है अगर इसमें आपस में भाईचारा और प्रेम का व्यवहार करेंगे तो वही हालात पैदा होंगे, जिसमें प्रेम, भाईचारा, मोहब्बत और इस्लामी शिक्षा की विशिष्टता होगे; और इन्हीं पर अमल करके इंसान अल्लाह के निकट सफल और उसकी बरकतों का हक़दार बन सकता है।

आपने अपनी अनेक तक़रीरों में इस ओर ध्यान दिलाया है कि जलसे पर आने का एक उद्देश्य उच्च नैतिक गुणों को पाना है, और यह भी बताया कि इस उच्च नैतिकता का प्रदर्शन हर तरफ़ से होना चाहिए।

कभी-कभी छोटी-छोटी बातों में रंजिशें और झगड़े पैदा हो जाते हैं, यहाँ तक कि कर्मचारियों में भी कभी-कभार मन-मुटाव हो जाता है ऐसा कभी नहीं होना चाहिए।

हमेशा अच्छे आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। अतः इस ओर कर्मचारी भी और मेहमान भी दोनों ध्यान दें कि हमारे नैतिक गुण हमेशा उच्च हों, और हर बुराई से बचने के लिए सदा दुआ करते रहें।

इसी प्रकार, जलसे के बारे में कुछ और बातें

भी बताना चाहता हूँ। पहली बात तो यह है कि जलसा के दिनों में आप जहाँ भी निवास करें, जब मस्जिदों में जाएँ विशेष रूप से लंदन की बैतुल फ़ुतूह, मस्जिद

फ़ज़्ल, इस्लामाबाद या अन्य कहीं तो अपने पड़ोसियों का भी ध्यान रखें और अपने उत्कृष्ट आचरण का प्रदर्शन करें।

सड़क के नियमों का पालन करें। कभी-कभी भीड़ के कारण ट्रैफिक अधिक हो जाता है। ऐसे में, लोगों के घरों के सामने किसी प्रकार की गंदगी न डालें।

बच्चों वाली महिलाओं के लिए अलग मार्कियाँ बनाई गई हैं। महिलाओं के लिए भी कहना है कि उन्हें बिना ज़िद किए उन्हीं बच्चों वाली मार्कियों में रहना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि वहाँ शोर न मचाएँ। कभी-कभी बच्चे कम शोर करते हैं, पर महिलाएँ यह समझ बैठती हैं कि क्योंकि वे उस मार्की में आ गई हैं, इसलिए वहाँ बातें करना उचित हो गया है।

उन्हें बातचीत से परहेज करना चाहिए और भाषण व कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। जब वे खुद अपना उदाहरण प्रस्तुत करेंगी, तो बच्चे भी शांत रहेंगे और भाषण सुन सकेंगे।

कुछ माताएँ, माशाअल्लाह, अपने बच्चों की बेहतरीन परवरिश करती हैं या उनकी रुचि के लिए कुछ चीज़ उनके हाथ में देकर उन्हें व्यस्त रखती हैं, जिससे वे स्वयं भी कार्यक्रम सुन पाती हैं; परंतु कुछ ऐसी भी हैं, जो आपस में बातें करती रहती हैं जिसकी व्यवस्थापक शिकायत करते हैं। ऐसी शिकायतें कभी न आने दें। और जब उन्हें टोका जाता है, तो नाराज़गी भी जताती हैं जबकि दोष दोनों ओर होता है।

यदि किसी कर्मचारी ने सख्ती से कुछ कहा तो मेहमान ने भी सख्ती से जवाब देकर बात बिगाड़ दी। इसलिए कोशिश करें कि किसी भी ओर से कड़वाहट पैदा न हो, बल्कि प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण बना रहे।

इसी प्रकार पार्किंग और गेट सहित सभी व्यवस्थाओं के मामले में, मेहमानों को कर्मचारियों के साथ पूरा सहयोग करना चाहिए,

ताकि सारे इंतज़ाम सहजता और सुचारु रूप से चल सकें। इसी प्रकार, मेहमानों को अपने आस-पास के वातावरण पर भी ध्यान रखना चाहिए। यदि कोई संदिग्ध वस्तु दिखे तो तुरंत सूचना दें। जब एक-दूसरे पर नजर रखी जाती है, तो यदि कोई शरारती व्यक्ति कोई बुरा इरादा भी रखता है, तो वह रुक जाता है या सतर्क हो जाता है और उसे बुरी हरकत करने की हिम्मत नहीं होती।

इसलिए, हर आनेवाले को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसे भी वातावरण को सुरक्षित रखने और उसकी हिफ़ाज़त के लिए अपने चारों ओर नज़र रखनी है। इसी तरह जो डिप्लिन बनाए रखने वाली प्रशासन है, उसका भी लोगों को भरपूर सहयोग करना चाहिए। अपने कार्ड हमेशा अपने पास रखें और जांच में दिखाएँ। जो लोग निवास स्थानों में ठहरे हुए हैं, उन्हें कोशिश करनी चाहिए कि अपनी कोई कीमती चीज़ वहाँ छोड़कर न जाएं। यहाँ सुरक्षा की व्यवस्था अवश्य है, लेकिन उसके बाद भी अपनी कीमती वस्तुएँ, जैसे पैसे आदि, अपने साथ रखें, ताकि किसी प्रकार का नुकसान न हो।

अल्लाह तआला करे कि आप सभी इस जलसे से भरपूर लाभ उठाने वाले बनें, इसकी बरकतों से लाभान्वित हों, और जब वापस लौटें तो अपनी झोलियाँ अल्लाह तआला के रहमो-करम से भरकर ले जाएं।

अल्लाह तआला के फज़्लों के वारिस बनते हुए आप लौटें। अल्लाह तआला हमेशा आपकी और आपकी नस्लों की ज़िन्दगी में अपना अनुग्रह फ़रमाता रहे। आप सदा अहमदियत का एक उपयोगी और लाभदायक अस्तित्व बनकर संसार में जीवन व्यतीत करें।

आपकी संतानें भी इसी तरह एक शुद्ध और लाभदायक अस्तित्व बनकर इस दुनिया में जीवन बिताएँ और अल्लाह करे कि यह सिलसिला क़यामत तक चलता रहे।

अंत में यह भी बता दूँ कि पिछले वर्षों की ही तरह इस वर्ष भी विभिन्न विभागों की प्रदर्शनियाँ लगाई गई हैं, जो ज्ञानवर्धक और रोचक हैं; ज्ञान में वृद्धि का कारण हैं। उन्हें भी देखने का प्रयास करें।

एक ही स्थान पर सभी प्रदर्शनियाँ एकत्रित हैं। इसी तरह,बुक स्टॉल पर भी नई पुस्तकें आई हैं, वहाँ भी अवश्य जाएँ। विश्राम के समय केवल बाजारों में ही न घूमे रहें या सिर्फ उनकी खरीदारी में ही लगे न रहें, बल्कि इस आध्यात्मिक भोज का भी भरपूर लाभ उठाने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला सभी को यह तौफ़ीक़ दे।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बच्चे से दरयाफ़त फ़रमाया कि तुम्हारी उम्र क्या है? तो बच्चे ने जवाब दिया कि ग्यारह साल। इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जब तुम पैदा हुए थे, उससे चार साल पहले खलीफ़ा मुंतखिब (चुना गया) था। और जहाँ तक यह बात है कि कैसा लगा था, तो ऐसा लगा था कि बहुत ज़्यादा बोझ पड़ गया है।

एक खादिम (सेवक) ने सवाल किया कि मेरी पिछले साल शादी हुई है। नए शादीशुदा जोड़ों के लिए कोई नसीहत फरमा दें।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको शादी की मुबारक हो और नसीहत यह है कि हर एक इंसान में कमज़ोरियाँ होती हैं। कोई भी इंसान कामिल (पूर्ण) नहीं होता, न खाविंद (पति), न बीवी, न लड़का न लड़की। इसलिए अगर एक-दूसरे की कमियाँ देखो तो अपनी ज़बान और आँखें बंद कर लिया करो। इससे बड़ी आराम से ज़िंदगी गुज़रेगी।

एक बच्चे ने सवाल किया कि हज़ूर, जब आप छोटे थे तो आप का क्या दिल करता था कि आप बड़े होकर क्या बनेंगे?

इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि 'जो मेरा दिल करता था, वह तो मैं नहीं बना।'

एक वक़्फ़ी-ए-नौ ने सवाल किया कि सोने के बर्तन में खाना खाना हराम क्यों है?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सोना दिखावे की चीज़ है और अल्लाह तआला को दिखावा और ऐसी चीज़ें पसंद नहीं। एक तरफ तुम सोने के बर्तन में खाना खा रहे हो और ग़रीब आदमी को मिट्टी के बर्तन में भी खाना नहीं मिलता। एक तो यह वजह है, दूसरी अल्लाह तआला पसंद नहीं फ़रमाता कि अपनी दौलत का इस तरह इज़्हार किया जाए। आजकल दुनिया में हमारे मुसलमान बादशाह भी इस तरह का इज़्हार कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला को यह पसंद नहीं है। अल्लाह तआला को सादगी पसंद है। इससे बेहतर है ग़रीबों को पैसा दो, ख़ैरात करो, लोग भूखे मर रहे हैं, सूडान में, सोमालिया में और यमन में, उनको दो। यह एहसास दिलाने के लिए है कि एक तरफ सोने में खाने वाले और दूसरी तरफ लोग भूख से मर रहे हैं। अल्लाह तआला को सादगी पसंद है, इसलिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहा कि 'तेरी आजिज़ाना (विनम्र) राहें उसे पसंद आईं।' तो आजिज़ी (विनम्रता) अल्लाह तआला को बहुत पसंद है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक शेर में भी कहा है कि तुम अपने आप को लोगों से कम तर समझो, आजिज़ी दिखाओ। अगर तुम सोने-चाँदी के बर्तनों में खाना खाओगे तो तुम्हारे अंदर घमंड, लापरवाही और तकब्बुर (अहंकार) पैदा हो जाएगा और घमंड-ओ-तकब्बुर अच्छा नहीं होता और अल्लाह तआला से दूर ले जाता है।

एक वक़्फ़ी-ए-नौ ने अर्ज़ किया कि प्यारे हज़ूर, मेरा सवाल नहीं है, लेकिन मैं हज़ूर अनवर का तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि हज़ूर अनवर इतनी ज़्यादा मसरूफ़ियत (व्यस्तता) से वक़्त निकाल कर हमारे पास तशरीफ लाए हैं और हमारे साथ वक़्त गुज़ारा है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जज़ाकुमुल्लाह (अल्लाह आपको बदला दे)। निज़ हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़त फ़रमाया कि तुम यहाँ कब आए थे? तो खादिम ने जवाब दिया कि पंद्रह साल हो गए।

इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पंद्रह सालों में तुमने अपनी उर्दु और आवाज़ अच्छी रखी हुई है।

वक़्फ़ीन-ए-नौ के साथ यह क्लास सवा नौ बजे तक जारी रही। आख़िर में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तमाम शामिल होने वाले वक़्फ़ीन को बारी-बारी जाए नमाज़ (प्रार्थना आसन) अता फरमाए।

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह तशरीफ ले गए।

(शेष...)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

हज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक पर नज़र पड़ी तो यूं महसूस हुआ कि हज़ूर अनवर के बा-बरकात वजूद से नूर की शुआएं (किरणें) फूट रही हैं। मैं आज अपने आप को बहुत ही खुशनसीब समझता हूँ कि आज मुझे मुद्दतों बाद इमाम-उज़-ज़मान के खलीफ़ा का दीदार और शरफ़-ए-मुलाकात नसीब हुआ

नकी बेटी ने बताया कि हज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक पर नूर ही नूर था। यह मुलाकात बहुत ही सहर-अंगेज़ (मंत्रमुग्ध कर देने वाली) और खूबसूरत थी। हज़ूर अनवर हमसे इतने प्यार से मिले कि इस मुलाकात और अपने आक़ा की मुहब्बत का नक़्शा हमारे दिलों में हमेशा के लिए नक़्श (अंकित) हो गया है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सिर्फ एक खुत्बे पर क्यों तवज्जो दे रहे हैं? सारे खुत्बों पर क्यों नहीं दे रहे? सौ फ़ीसद अंसार खुत्बा सुनें और हर खुत्बा सुनें। आपका टारगेट यह होना चाहिए कि हर नासिर (अंसार सदस्य) बाक़ायदा हर हफ्ते खुत्बा सुने।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि ऐसे अंसार जिनकी उम्रें 65 साल से ज़्यादा हो चुकी हैं, उन्हें वसिय्यत के हवाले से न कहें। लोगों को चाहिए कि वे अपनी उम्र के पहले हिस्सों में निज़ाम-ए-वसिय्यत में शामिल हों।

अगर हर मजलिस में सौ फ़ीसद आमिला कार्यकारी सदस्य पाँच नमाज़ें बाजमाअत पढ़ें या कम-अज़-कम तीन नमाज़ें फजर, मग़रिब व इशा बाजमाअत पढ़ें तो आप की तादाद बढ़ जाएगी। यह आप लोगों की ड्यूटी है। इस पर फोकस करें और इस पर काम करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र अदा की। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए।

सुबह हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्ट्स का मुलाहिज़ा फ़रमाया और हिदायतों से नवाज़ा।

मस्जिद बैतुर्रहमान से लगभग पचास मील की दूरी पर, मजलिस-ए-अंसारुल्लाह यूएसए के तहत जापा क्षेत्र में एक नदी के किनारे एक आवासीय योजना पर कार्य हो रहा है, जहाँ सभी घर अहमदी भाइयों के होंगे। यहाँ 48 घरों के निर्माण की योजना है और एक सामुदायिक केंद्र (कम्युनिटी सेंटर) व मस्जिद भी है।

आज के कार्यक्रम के अनुसार इस स्थान के भ्रमण का कार्यक्रम था। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ साढ़े नौ बजे अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ लाए और जापा के लिए रवाना हुए। लगभग एक घंटे के सफ़र के बाद साढ़े दस बजे यहाँ तशरीफ़-आवरी (पधारना) हुई।

इस समय यहाँ 14 घरों का निर्माण हो चुका है। एक ब्लॉक में चार घर हैं और दो ब्लॉकों में पाँच-पाँच घर हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन घरों के निर्माण का मुआयना फ़रमाया और इस आवासीय योजना की परियोजना एवं योजना (प्लानिंग) का जायज़ा लिया।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त के तहत श्रीमान इजाज़ अहमद खान साहिब के घर कुछ देर के लिए तशरीफ लिया। इसके बाद श्रीमान श्रीमान अता उल-करीम चौधरी साहिब, क्षेत्रीय नाज़िमे आला अंसारुल्लाह नॉर्थ वेस्ट रीजन, के घर का भी हज़ूर अनवर ने भ्रमण फ़रमाया। बाल्टीमोर जमाअत के पूर्व सदर डॉक्टर अमीन बेग साहिब के घर भी हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ समय के लिए तशरीफ ले गए।

इसके पश्चात श्रीमान श्रीमान अब्दुर्रफ़ीक जदरान साहिब के घर भी हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए तशरीफ ले गए। रफ़ीक जदरान साहिब मजलिस-ए-नुसरत-ए-जहाँ के तहत घाना में लगभग 14 वर्षों तक विभिन्न अहमदिया हाई स्कूलों के प्रिंसिपल रहे हैं।

यहाँ पहले ब्लॉक में एक घर मुख्य अतिथि गृह (सेंट्रल गेस्ट हाउस) के रूप में भी बनाया गया है। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस अतिथि गृह का भी विस्तृत मुआयना फ़रमाया और आंतरिक विभाजन (इंटीरियर पार्टिशन) के संदर्भ में कुछ हिदायतें भी प्रदान कीं।

इसके बाद, मौजूद मजलिस-ए-अंसारुल्लाह के सदस्यों ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ समूह तस्वीर लेने की सऊद (सौभाग्य) प्राप्त की।

इसके बाद साढ़े ग्यारह बजे यहाँ से वापसी के लिए रवानगी हुई और साढ़े बारह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़-आवरी (पधारना) हुई।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ ले आए, जहाँ कार्यक्रम के अनुसार फैमिली मुलाकातें आरंभ हुईं।

फैमिली मुलाकात (पारिवारिक भेंट)

आज सुबह के इस सत्र में 62 परिवारों के 294 सदस्यों और 76 अहबाब (भाइयों) ने व्यक्तिगत रूप से हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात करने की सऊद प्राप्त की। इन सभी अहबाब और परिवारों ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर लेने की सौभाग्य प्राप्त किया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त के तहत शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलमें अता फ़रमाईं और छोटी उम्र के बच्चों एवं बच्चियों को शफ़क़त के तहत चॉकलेट अता फ़रमाई।

आज मुलाकात करने वाले अहबाब अमेरिका की निम्नलिखित जमाअतों से आए थे: वाशिंगटन की विभिन्न जमाअतों और पाकिस्तान से आने वाले अहबाब के अलावा, सेंट्रल वर्जीनिया, नॉर्थ वर्जीनिया, ओशकोश (Oshkosh), फ़िलाडेल्फ़िया, रिचमंड (Richmond), रिसर्च ट्राएंगल (Research Triangle), रोचेस्टर, साउथ वर्जीनिया और टल्सा (Tulsa) की जमाअतों से अहबाब मुलाकात के लिए पहुँचे थे। जो परिवार सबसे लंबा फासला सड़क मार्ग से तय करके आए, वे 1200 मील की दूरी लगभग उन्नीस घंटों में तय करके पहुँचे थे।

सय्यद दाऊद अहमद साहिब, जिनका ताल्लुक सेंट्रल वर्जीनिया की जमाअत से है, मुलाकात का ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि हज़ूर अनवर से जीवन की पहली मुलाकात हमारे जीवन का एक सुनहरा लम्हा था। हज़ूर अनवर से मुलाकात का शरफ़ नसीब होना मेरे एक दीर्घकालिक सपने की ताबीर (पूर्ति) थी। यह दिन हमारे लिए बहुत बरकतों वाला दिन है।

एक दोस्त मलिक फ़ारूक़ मुनीर साहिब मुलाकात का अहवाल बयान करते

हुए कहते हैं कि ज्योंही हज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक पर नज़र पड़ी तो यूं महसूस हुआ कि हज़ूर अनवर के बा-बरकात वजूद से नूर की शुआएं (किरणें) फूट रही हैं। मैं आज अपने आप को बहुत ही खुशनसीब समझता हूँ कि आज मुझे मुद्दतों बाद इमाम-उज़-ज़मान के खलीफ़ा का दीदार और शरफ़-ए-मुलाकात नसीब हुआ।

अता उल-फहीम साहिब, जो हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मुलाकात के लिए अटलांटा, जॉर्जिया से बड़ा लंबा सफर तय करके आए थे, बयान करते हैं कि जब मैं मुलाकात के लिए दफ़्तर दाखिल हुआ तो हज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक पर इतना नूर था कि मैं हज़ूर अनवर की तरफ़ ज़्यादा देर तक नहीं देख सका।

श्रीमान उमर खलील साहिब, जो जमाअत रिचमंड, वर्जीनिया से मुलाकात के लिए आए थे, बयान करते हैं कि आज मेरी हज़ूर अनवर से पहली मुलाकात थी, मैं अपनी खुशी को अल्फ़ाज़ (शब्दों) में बयान नहीं कर सकता। मैंने हज़ूर अनवर से अंगूठी की दरख्वास्त की तो हज़ूर अनवर ने मेरी अंगूठी लेकर उसी को बा-बरकत करके मुझे वापस लौटा दिया।

श्रीमान अली चौधरी साहिब, जो मैरीलैंड में रहते हैं, मुलाकात के बाद अपने तअस्सुरात (भावनाओं) का इज़हार करते हुए कहते हैं कि जब हज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाखिल होते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे वक़्त रुक गया है और आप एक नई रूहानी दुनिया में दाखिल हो रहे हैं। दरबार-ए-खिलाफत की रूहानी रोशनी और नूरानी मनाज़िर (दृश्य) बयान से बाहर हैं। हज़ूर अनवर जमाअत के हर फर्द (सदस्य) की फिक्र रखते हैं और छोटी-छोटी बातों पर भी आप की नज़र होती है। दौरान-ए-मुलाकात आक़ा (स्वामी) ने मेरी और मेरी अहलिया (पत्नी) की नौकरी के मुतअल्लिक़ (बारे में) भी दरयाफ़्त (पूछताछ) फ़रमाई।

दाऊद अहमद साहिब अपनी फैमली के हमराह मुलाकात के लिए आए थे, आप बताते हैं कि हम अठारह सालों से अमेरिका में मुक़ीम (निवासी) हैं। लेकिन यह हज़ूर अनवर से हमारी पहली मुलाकात थी। हमने हज़ूर अनवर से दुआ की दरख्वास्त की। उनकी बेटी ने बताया कि हज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक पर नूर ही नूर था। यह मुलाकात बहुत ही सहर-अंगेज़ (मंत्रमुग्ध कर देने वाली) और खूबसूरत थी। हज़ूर अनवर हमसे इतने प्यार से मिले कि इस मुलाकात और अपने आक़ा की मुहब्बत का नक़्शा हमारे दिलों में हमेशा के लिए नक़्श (अंकित) हो गया है।

मुलाकात का यह प्रोग्राम साढ़े तीन बजे तक जारी रहा। बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ ला कर नमाज़-ए-ज़ोहर व अस्र जमा करके (संयुक्त करके) पढ़ाई। इसके बाद हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

मुलाकात नेशनल आमिला मजलिस-ए-अंसारुल्लाह यू.एस.ए.

प्रोग्राम के अनुसार छह बज कर बीस मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ लाए, जहाँ नेशनल मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह, यू.एस.ए. की हज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। मीटिंग के आग़ाज़ (आरंभ) में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सबसे पहले क़ायदे आम (महासचिव) से पूछने (पूछताछ) फ़रमाया कि कुल कितनी मजालिस (समितियाँ) हैं और क्या सबकी रिपोर्ट्स आती हैं और आप मर्कज़ (केंद्र) रिपोर्ट भेजते हैं?

इस पर क़ायदे आम ने अर्ज़ (प्रस्तुत) किया कि अमेरिका में अंसारुल्लाह की कुल 73 मजालिस हैं, जिन्हें 13 रीजन्स (क्षेत्रों) में तक्सीम (विभाजित) किया गया है। तमाम (सभी) मजालिस की तरफ से रिपोर्ट्स मुतसल्लिल (प्राप्त) होती हैं। और बाक़ायदगी (नियमित रूप से) के साथ हर महीने रिपोर्ट मर्कज़ भी भेजते हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सिर्फ रिपोर्ट्स मुतसल्लिल करते हैं, ख़्वाह (चाहे) काम हुआ हो या न हुआ हो? इस पर क़ायदे आम साहिब ने अर्ज़ किया कि तमाम मजालिस में मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) प्रोग्रामों का इनिकाद (आयोजन) होता है और इसका ज़िक्र मजालिस की रिपोर्ट में होता है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तालीम-उल-कुरआन ने अर्ज़ किया कि हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशादात (आदेशों) की रोशनी में हमारा हदफ़ (लक्ष्य) है कि सौ फ़ीसद अंसारुल्लाह रोज़ाना कुरआन करीम की तिलावत (पाठ) करें। इस वक़्त रिपोर्ट्स के मुताबिक़ 62 फ़ीसद अंसार रोज़ाना कुरआन करीम की तिलावत करते हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पूछने फ़रमाया कि वक़्फ़-ए-आरज़ी (अस्थाई समर्पण) भी आपके शोबे (विभाग) की ज़िम्मेदारी है। कितने अंसार ने वक़्फ़-ए-आरज़ी की है?

इस पर क़ायद तालीम-उल-कुरआन साहिब ने अर्ज़ किया कि गुज़िश्ता (पिछले) साल कुल 52 अंसारों ने वक़्फ़-ए-आरज़ी की थी, जबकि मौजूदा साल के अदाद-ओ-शुमार (आँकड़े) इस वक़्त हमारे पास मौजूद नहीं हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया: आप इस तरफ़ भी तवज्जो (ध्यान) दें और वक़्फ़-ए-आरज़ी करने वालों की तादाद (संख्या) बढ़ाएँ। यह भी आपके शोबे की ज़िम्मेदारी है।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ायद तालीम (शिक्षा प्रमुख) से पूछने फ़रमाया कि उनका दौरान-ए-साल (साल भर) का तालीम के हवाले से क्या मंसूबा (योजना) है? इस पर क़ायद तालीम ने अर्ज़ किया कि हमने इस साल के लिए 'कश्ती-ए-नूह' और उसमें मज़कूरह (वर्णित) कुरआनी आयात को सिलेबस में रखा था। पहले हमने यह किताब छह महीने के लिए रखी थी, लेकिन हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के 'कश्ती-ए-नूह' के अध्ययन के हवाले से खुत्बा-ए-जुमा के बाद इसे छह महीने की बजाय पूरे साल के लिए रख लिया।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तालीम ने अर्ज़ किया कि इस वक़्त 1542 अंसार इसका मुताले (अध्ययन) कर चुके हैं, जो कि पचास फ़ीसद के करीब बनता है। इन अंसारों ने बाक़ायदा इसका ऑनलाइन इम्तिहान (परीक्षा) दिया है।

बाद में क़ायद तरबियत (प्रशिक्षण प्रमुख) ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर अर्ज़ किया कि इस साल हमारे दो बड़े हदफ़ हैं। एक तो यह कि अंसार हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का खुत्बा-ए-जुमा सुनें और दूसरे निज़ाम-ए-वसिय्यत (वसीयत प्रणाली) में शामिल हों।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप नमाज़ बाजमाअत (सामूहिक नमाज़) के क़याम (स्थापना) पर तवज्जो क्यों नहीं दे रहे? इस तरफ़ भी ख़ास तवज्जो दें।

क़ायद तरबियत ने अर्ज़ किया कि हमने खुत्बा-ए-जुमा के हवाले से अंदाज़ा लगाया था कि कितने अंसार हैं जो हर महीने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का कम-अज़-कम (कम से कम) एक खुत्बा सुनते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सिर्फ एक खुत्बे पर क्यों तवज्जो दे रहे हैं? सारे खुत्बों पर क्यों नहीं दे रहे? सौ फ़ीसद अंसार खुत्बा सुनें और हर खुत्बा सुनें। आपका टारगेट यह होना चाहिए कि हर नासिर (अंसार सदस्य) बाक़ायदा हर हफ़्ते खुत्बा सुने।

इस पर सदर मजलिस-ए-अंसारुल्लाह ने अर्ज़ किया कि हम सिर्फ इस बात का अंदाज़ा लगा रहे थे कि कितने अंसार हैं जो कम-अज़-कम एक खुत्बा सुनकर उसे अपने घरवालों के साथ डिस्कस (चर्चा) करते हैं। हमारा मक़सद था कि लोग खुत्बा-ए-जुमा को अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बना लें और खुत्बे को बाक़ायदा अपनी फैमली में डिस्कस किया करें।

क़ायद तरबियत ने वसिय्यत के हवाले से बताया कि हमने दरमियानी (मध्यम) मजालिस को तीन सदस्यों की वसिय्यत और बड़ी मजालिस को पाँच सदस्यों की वसिय्यत का टारगेट दिया हुआ है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि ऐसे अंसार जिनकी उम्रें 65 साल से ज़्यादा हो चुकी हैं, उन्हें वसिय्यत के हवाले से न कहें। लोगों को चाहिए कि वे अपनी उम्र के पहले हिस्सों में निज़ाम-ए-वसिय्यत में शामिल हों।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि नमाज़-ए-बाजमाअत के क़याम की तरफ़ ख़ुसूसी (विशेष) तवज्जो दें। अंसार को कुरआन करीम की आयात, अहादीस (हदीसें), हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफा (खलीफाओं) के इक़्तिबासात (उद्धरणों) के ज़रिए

पंजवक्ता नमाज़ (पाँच समय की नमाज़) के इल्तिजाम (नियमित पालन) की तरफ़ मुतवज्जह (प्रेरित) करें। यह इक़्तिबासात हर नासिर तक पहुँचें और वह उन्हें पढ़ें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेशनल लेवल (राष्ट्रीय स्तर) पर और मुक़ामी (स्थानीय) सतह पर इस बात को यक़ीनी (निश्चित) बनाएँ कि मजलिस-ए-आमिला का हर सदस्य बाक़ायदा पंजवक्ता नमाज़ की अदायगी करता हो, जिनमें से कम-अज़-कम तीन नमाज़ें बाजमाअत हों, ख़ास तौर पर फजर, मग़रिब और इशा।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने मजलिस-ए-अंसारुल्लाह यूके के इज्तिमा (सम्मेलन) के मौके पर जो ख़िताब (भाषण) किया था, उसे सुनें और उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा (अनुवाद) करके हर अंसार सदस्य तक पहुँचाएँ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तरबियत नौमुबाईन ने अर्ज़ किया कि गुज़िश्ता तीन सालों के 45 नौमुबाईन हैं। हम उन्हें फ़्री इस्लामिक ऑनलाइन कोर्स और whyahmadi.org की वेबसाइट इस्तेमाल करने की तरफ़ तवज्जो दिलाते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नौमुबाईन को नमाज़ आनी चाहिए, उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा और मक़ासिद (उद्देश्यों) का इल्म (ज्ञान) होना चाहिए।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तरबियत नौमुबाईन ने अर्ज़ किया कि इस साल के जो 11 नौमुबाईन हैं, उनसे भी हमारा बाक़ायदा राबता (संपर्क) है।

क़ायद तबलीग (प्रचार प्रमुख) ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए अर्ज़ किया कि उनके दौरान-ए-साल यह हदफ़ थे कि अंसार हज़ूर अनवर का ख़ुत्बा बाक़ायदगी से सुनें, तबलीग में हिस्सा लें, ग्रुप तबलीग एक्टिविटी करें और जलसे के मौके पर मेहमानों को लेकर आएँ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तबलीग ने अर्ज़ किया कि उनके कुल 165 दाइयान-इलल्लाह (ईश्वर की ओर आमंत्रित करने वाले) हैं और दौरान-ए-साल अंसारुल्लाह के ज़रिए 11 बैअतें हुई हैं।

क़ायद तहरीक-ए-जदीद ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर अर्ज़ किया कि इमसाल (इस साल) तहरीक-ए-जदीद में 1632 अंसार अब तक हिस्सा ले चुके हैं और हमारा हदफ़ है कि कम-अज़-कम नव्वे (नब्बे) फ़ीसद अंसार तहरीक में हिस्सा लें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तबलीग ने अर्ज़ किया कि हम सदस्यों-ए-मजलिस को हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बात में से इक़्तिबासात और बुज़ुर्गान (बुज़ुर्गों) के वाक़िआत (प्रसंगों) के ज़रिए तहरीक (प्रेरित) करते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अंसारुल्लाह को तहरीक-ए-जदीद में शामिल होने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) दिलाने के लिए और उन्हें मोटिवेट (प्रेरित) करने के लिए मुख़्तलिफ़ तरीके तलाश करने होंगे और कोशिश करें कि वे हर महीने तहरीक-ए-जदीद का चंदा अदा करें।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर आप तमाम मजालिस में अपने नाज़िमीन (सचिवों) को एक्टिवेट (सक्रिय) करें तो आप अपना टारगेट हासिल कर सकते हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायदे साहिब वक़्फ़-ए-जदीद ने अर्ज़ किया कि गुज़िश्ता साल 2435 अंसारों ने वक़्फ़-ए-जदीद में शुमूलियत (भागीदारी) इख़्तियार (प्राप्त) की थी और इमसाल अब तक 1600 अंसार शामिल हो चुके हैं और अदायगी कर चुके हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अब तक आपका पचास फ़ीसद भी नहीं हुआ। इस पर क़ायदे साहिब वक़्फ़-ए-जदीद ने अर्ज़ किया कि उमूमन (आम तौर पर) लोग आख़िरी दो महीनों में अदायगी करते हैं, इसलिए इंशा अल्लाह तादाद (संख्या) में इज़ाफ़ा (वृद्धि) हो जाएगा।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सौ फ़ीसद अंसार चंदा वक़्फ़-ए-जदीद में क्यों नहीं शामिल हुए? सौ फ़ीसद शामिल होने चाहिए।

क़ायदे ज़ेहानत-ओ-सिहत-ए-जिस्मानी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए अर्ज़ किया कि 30 फ़ीसद से ज़्यादा अंसार व्यायाम करते हैं। इसके अलावा हमने एक हेल्पलाइन भी बनाई हुई है जिसके ज़रिए अंसारुल्लाह की मुश्किलें इत्यादि सुनते हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर आडिटर साहिब मजलिस-ए-अंसारुल्लाह ने अर्ज़ किया कि वह लोकल जमाअतों का दौरा नहीं करते बल्कि उन्हें लोकल जमाअतों से सह माही (त्रैमासिक) रिपोर्ट्स मुतसल्लिल (प्राप्त) होती हैं। ज़रूरत पड़ने पर बाज़ मजालिस से मज़ीद तफ़्सीलात (और विवरण) भी मंगवा लेते हैं और बाक़ायदा ऑडिट का काम करते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आडिटर का यह भी काम होता है कि वह बाक़ायदा मजालिस का दौरा करके वहाँ जाकर ऑडिट करे।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ायदे तजनीद (सदस्यता रिकॉर्ड प्रमुख) से दरयाफ़त (पूछताछ) फ़रमाया कि क्या आपकी तजनीद (सदस्यता रिकॉर्ड) सही है? अपनी तजनीद को मुकम्मल करने के लिए क्या कर रहे हैं?

इस पर क़ायदे साहिब तजनीद ने अर्ज़ किया कि हमारा हदफ़ है कि हमारे पास 100 फ़ीसद अंसार की तजनीद मुकम्मल हो और इसके लिए हम तजनीद ड्राइव्स का इनिकाद (आयोजन) करते हैं। मजालिस को कहते हैं कि घर-घर जाकर तजनीद मुकम्मल करें। ऑनलाइन भी अंसार की तजनीद अपडेट कर रहे हैं। इस तरह तजनीद मुकम्मल कर रहे हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ायदे इसार से पूछने फ़रमाया कि क्या आपने 'वाटर फॉर लाइफ' या इस क़िस्म का कोई दूसरा प्रोजेक्ट शुरू किया है? इस पर क़ायदे इसार ने अर्ज़ किया कि दौरान-ए-साल (साल भर में) हमने पाकिस्तान में एक कुआँ लगवाया है। हमारा दस हज़ार डॉलर्स का बजट है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इतनी बड़ी मजलिस जिसमें काफ़ी मुख़ैर (दानशील) लोग भी हैं, उसके लिए सिर्फ एक कुआँ काफ़ी नहीं है। आपको चाहिए कि कोई बड़ा प्रोजेक्ट लें। एक कुएँ का ख़र्च तो सिर्फ एक आदमी अदा कर देता है।

क़ायदे इसार ने अर्ज़ किया कि इस साल हमारा मंसूबा (योजना) था कि हम बूढ़े और बीमार लोगों से मिलें। इसके अलावा जो मुम्बरान (सदस्य) फ़आल (सक्रिय) नहीं हैं, उनके साथ भी राब्ते (संपर्क) किए जाएँ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया: अंसारुल्लाह यू.एस.ए. अफ़्रीका में मॉडल विलेज के अख़राजात (खर्च) बर्दाश्त करे। अंसारुल्लाह यू.के. पाँच लाख पाउंड्स के अख़राजात से बुर्कीना फासो में एक आई हस्पताल बना रहे हैं। इसलिए कोई बड़ा मंसूबा (प्रोजेक्ट) रखें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायदे इशाअत (प्रकाशन प्रमुख) ने अर्ज़ किया कि उनके तीन पीरियडिकल्स हैं जिसमें एक बाई-वीकली (सप्ताह में दो बार) है, एक ई-न्यूज़लेटर और एक सालाना रिसाला (पत्रिका) 'अल-नहल' है जिसमें सालाना रिपोर्ट शाई (प्रकाशित) की जाती है। ई-न्यूज़लेटर 3300 अंसार में तक़्सीम (वितरित) किया जाता है और उसे 33 फ़ीसद अंसार पढ़ते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लोग रिपोर्ट्स इत्यादि में दिलचस्पी नहीं लेते, इसलिए इस क़िस्म का मावाद (सामग्री) रखें जो लोगों की दिलचस्पी का बाइस (कारण) हो। इसी तरह अंसार को तहरीक (प्रेरित) करें कि वह 'अल-हकम' का भी मुतालेअ (अध्ययन) किया करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायदे माल (कोषाध्यक्ष) ने अर्ज़ किया कि गुज़िश्ता (पिछले) साल 2500 अंसार चंदे में शामिल हुए थे और इस साल हमारा टारगेट है कि 2700 अंसार शामिल हों।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायदे माल ने अर्ज़ किया कि औसत चंदा फ़ी नासिर (प्रति सदस्य) के हिसाब से 303 डॉलर्स सालाना है। लेकिन अगर उन मुम्बरान को शामिल न करें जो कमाते नहीं हैं तो औसत 453 डॉलर्स बनती है। क़ायदे माल ने अर्ज़ किया कि जिनकी इनकम नहीं है, उनके लिए हमने कम-अज़-कम 36 डॉलर्स सालाना चंदे का मेयार (मानक) मुक़र्रर (निर्धारित) किया हुआ है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत

फ़रमाई कि चंदे के हवाले से लोगों को प्यार से तवज्जो दिलानी है, ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं करनी। चंदे की अहमियत बताते रहा करें।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर मोआविन सद्र बराए आईटी ने अर्ज़ किया कि उनके सुपुर्द अंसारुल्लाह की वेबसाइट, रिपोर्टिंग और सर्वे इत्यादि करना है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि हर महीने कितने लोग आपकी वेबसाइट पर आते हैं। इस पर मोआविन सद्र ने अर्ज़ किया कि इसका उन्हें इल्म नहीं है। इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आजकल तो इस क़िस्म की मालूमात हासिल करना बड़ा आसान काम है।

इसके बाद नाइबे सद्र-ए-दोम (दूसरे उपाध्यक्ष) ने अर्ज़ किया कि उनके ज़िम्मे माल, तहरीक-ए-जदीद, वक़्फ़-ए-जदीद, आडिट और ताहिर स्कॉलरशिप के डिपार्टमेंट्स हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फ़रमाने पर नाइबे सद्र-ए-दोम ने अर्ज़ किया कि ताहिर स्कॉलरशिप के तहत उन अंसार की मदद की जाती है जिन्हें नौकरियों से निकाल दिया जाता है और वह बेरोज़गार होते हैं और कोई नई स्किल या काम सीखना चाहते हैं।

नाइबे सद्र-ए-सफ़-ए-दोम ने अर्ज़ किया कि उनके सुपुर्द शोबा-ए-सिहत (स्वास्थ्य विभाग) है। इसके अलावा वह नेशनल इज्तिमा (राष्ट्रीय सम्मेलन) के नाज़िमे आला (महा सचिव) भी हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि आपके कितने अंसार व्यायाम करते हैं? साइक्लिंग करते हैं?

इस पर मौसूफ़ (उक्त महोदय) ने अर्ज़ किया कि 30 फ़ीसद शामिल होते हैं। बाज़ मजालिस में लोकल क्लब हैं, वहाँ साइक्लिंग इत्यादि करते हैं।

इस मीटिंग में रीजनल नाज़िमीन-ए-आला (क्षेत्रीय महा सचिव) भी शामिल थे। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बारी-बारी उन नाज़िमीन से तआरुफ़ (परिचय) हासिल किया और उनके रीजन्स की मजालिस और हर मजलिस की तजनीद के हवाले से दरयाफ़्त फ़रमाया। निज़ दरयाफ़्त फ़रमाया कि कितनी मजालिस एक्टिव हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि सबसे पहले तो रीजनल नाज़िम-ए-आला को चाहिए कि वह सबसे ज़्यादा फ़आल (सक्रिय) हो।

एक रीजनल नाज़िम-ए-आला से हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या उनके रीजन के अंसार नमाज़ बाजमाअत अदा करते हैं? इस पर नाज़िम-ए-आला साहिब ने अर्ज़ किया कि सारे अंसार नहीं करते।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि टोमाले (घाना) में एक छोटी सी मस्जिद थी जो नमाज़ियों से भरी हुई होती थी। इसलिए अंसार को बार-बार तवज्जो दिलाते रहा करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नमाज़ बाजमाअत सबसे अहम चीज़ है। हर एक को चाहिए कि वह पंजवक्ता नमाज़ें पढ़े और उनमें से कम-अज़-कम तीन नमाज़ें फजर, मग़रिब और इशा बाजमाअत अदा करे। अगर हर मजलिस में सौ फ़ीसद आमिला कार्यकारी सदस्य पाँच नमाज़ें बाजमाअत पढ़ें या कम-अज़-कम तीन नमाज़ें फजर, मग़रिब व इशा बाजमाअत पढ़ें तो आप की तादाद बढ़ जाएगी। यह आप लोगों की ड्यूटी है। इस पर फोकस करें और इस पर काम करें।

मजलिस-ए-आमिला के साथ यह मीटिंग सात बज कर बीस मिनट पर ख़त्म हुई।

इसके बाद तमाम अराकीन-ए-आमिला (कार्यकारी सदस्यों) को हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सऊद (सौभाग्य) हासिल हुई।

वक़्फ़ात-ए-नौ क्लास

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ ले आए जहाँ प्रोग्राम के मुताबिक वक़्फ़ात-ए-नौ की क्लास का इनिकाद (आयोजन) हुआ।

प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत-ए-कुरआन करीम से हुआ जो अज़ीज़ा (आदरणीया) आबिया शाकिर वर्क ने की और इसका उर्दू तर्जुमा अज़ीज़ा सैय्यदा महरुन्निसा सबाहत ने पेश किया। जबकि अंग्रेज़ी तर्जुमा अज़ीज़ा माहिरा नासिर मोहर ने पेश किया।

बाद में अज़ीज़ा फाइक़ा माहम सैय्यदा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दर्ज-ज़ैल (निम्नलिखित) हदीस पेश की।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"ख़ैबर के ज़माने के बाद ऐसा दौर आएगा जिसमें जंग-ओ-जदाल (लड़ाई-झगड़ा) और गुमराही की ख़ूब तरवीज (प्रचार) और तबलीग होगी। ऐसे वक़्त में अगर तू खुदा का कोई खलीफ़ा पाए तो उससे चिमट जाना और उसको न छोड़ना, चाहे तेरा जिस्म नोच दिया जाए और तेरा सारा माल छीन लिया जाए।"

(मुसन्नदे अहमद बिन हंबल, बाबे बाक़ी मुसन्नदुल अंसार हदीस हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहो अन्हु)

इसके बाद अज़ीज़ा मुलाहिज़त महमूद ने हदीस का अंग्रेज़ी तर्जुमा पेश किया।

बाद में अज़ीज़ा आइशा फातिमा गोंडल ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दर्ज-ज़ैल इक़्तिबास (उद्धरण) पेश किया।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"सो मैंने महज़ खुदा के फ़ज़्ल से न अपने किसी हुनर से उस नेमत से कामिल हिस्सा पाया है जो मुझसे पहले नबियों और रसूलों और खुदा के बरगज़ीदों (चुने हुओं) को दी गई थी। और मेरे लिए उस नेमत को पाना मुमकिन न था अगर मैं अपने सैय्यद-ओ-मौला फ़ख़्रुल अम्बिया और ख़ैरुल वरा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के राहों की पैरवी न करता। सो मैंने जो कुछ पाया उस पैरवी से पाया और मैं अपने सच्चे और कामिल इल्म से जानता हूँ कि कोई इंसान बजुज़ पैरवी उस नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खुदा तक नहीं पहुँच सकता और न ही मारिफ़त-ए-कामिला (पूर्ण ज्ञान) का हिस्सा पा सकता है।"

(हक़ीक़तुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 22 पृष्ठ 64, 65)

बाद में इक़्तिबास का अंग्रेज़ी तर्जुमा अज़ीज़ा कुर्रतुलऐन ओबैदुल्लाह ने पेश किया। इसके बाद उर्दू नज़्म अज़ीज़ा शमाइला अहमद और उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा अज़ीज़ा अरूसा मलिक ने पेश किया।

बाद में अज़ीज़ा समरीन शिराज़ ने उर्दू ज़बान में "खिलाफत की बरकात" के उन्वान (शीर्षक) पर तक़रीर (भाषण) की। बाद में अज़ीज़ा मुदीहा अज़ीम कुरैशी, अज़ीज़ा फरीदा और अज़ीज़ा समरीन अहमद ने "खिलाफत, हमारी रग-ए-जान" के उन्वान पर एक प्रेज़ेंटेशन दिया।

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वक़्फ़ात-ए-नौ बच्चियों को सवालात करने की इजाज़त अता फ़रमाई।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ बच्ची ने सवाल पूछा कि अगर स्कूल में ग्रेड अच्छे न हों तो क्या करना चाहिए?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ज़्यादा मेहनत करें। अगर आप मेहनत करेंगे तो अल्लाह तआला उसका सिला (बदला) भी देता है।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ बच्ची ने सवाल किया कि जैसा कि हम जानते हैं कि हमें अपने मुल्क से वफादारी करनी है लेकिन यहाँ इतने ज़्यादा मसाइल (समस्याएँ) हैं। इन मसाइल के होते हुए हम अपने मुल्क से कैसे वफादार रहें?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मसाइल तो सियासी (राजनीतिक) पार्टियों के और सियासतदानों (राजनीतिज्ञों) के हैं। आपको तो मुल्क के साथ वफादार रहना है। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मुल्क से वफादारी ईमान का हिस्सा है। अगर आपके ख़्याल में सियासतदान सही नहीं हैं या फिर वह मआशरे (समाज) के अमन को बर्बाद कर रहे हैं या फिर वह ईमानदारी से लोगों की तरफ अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा रहे तो फिर भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आप ऐसे रहनुमाओं के ख़िलाफ़ न खड़े हों और मआशरे के अमन को बर्बाद मत करें। आप इंतज़ार करें, दुआ करें और जब अगले इंतिखाबात (चुनाव) हों तो ऐसे लोगों को मुंतखिब (चुन) करें जो कि मुल्क, मआशरे और इंसानियत के लिए फ़ाएदमंद और वफादार हों।

इसके बाद एक वक़्फ़ा-ए-नौ बच्ची ने सवाल पूछा कि हम जानते हैं कि

सरोगेसी (Surrogacy) इस्लाम में मुनअ (मना) है। लेकिन अगर कोई अंडा दान (Donate Egg) करना चाहे ताकि कोई और अपनी फैमली शुरू कर सके तो उस हवाले से क्या तालीम है?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर जोड़े में से किसी एक में बाँझपन है, मर्द या औरत में, तब तो कुछ इलाज हैं जैसे आईवीएफ (IVF) या ऐसे मसनुई (कृत्रिम) तरीके जिसमें कमज़ोर नुत्फ़ा (शुक्राणु) को रहम (गर्भाशय) में डाला जाता है, लेकिन इस्लाम कहता है रहम में अंडा और नुत्फ़ा मियाँ और बीवी का ही होना चाहिए किसी और का नहीं।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ बच्ची ने सवाल किया कि मैंने स्कूल में पढ़ा है कि अगर कोई जिस्मानी तौर पर बहुत ज़्यादा मअज़ूर (अपाहज) है तो उसे बग़ैर दर्द के मौत के घाट उतारा जा सकता है, तो मैंने पूछना था कि क्या यह इस्लाम में जाइज़ है?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह लोग उसे मर्सी किलिंग (Mercy Killing) कहते हैं। इस्लाम में यह जाइज़ नहीं। इस्लाम कहता है कि जब तक तुम्हारी ज़िंदगी है, तुम्हारा साँस है, जब तक तुम्हें अल्लाह तआला ने ज़िंदा रखा हुआ है, तुम ज़िंदा रहो। किसी भी मसनुई तरीके से अपने आप को नहीं मारना। न ज़हर से, न गोली से न ही किसी और तरीके से। यह ख़ुदकुशी है।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ बच्ची ने सवाल किया कि आपने अब तक जितनी भी दुनिया देखी है, आपको सबसे अच्छी जगह कौन सी लगी है?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सारी दुनिया ही अच्छी है। सारी दुनिया ही अल्लाह तआला की बनाई हुई है।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ ने सवाल किया कि मेरी बेटी अब स्कूल में जाती है और स्कूल में क्रिसमस और हैलोवीन के प्रोग्राम होते हैं, तो क्या मुझे अपनी बेटी को उसमें शामिल होने की इजाज़त देनी चाहिए?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हैलोवीन तो वैसे ही ग़लत है, तो बाकी क्रिसमस का क्या प्रोग्राम होता है?

इस पर वक़्फ़ा-ए-नौ ने बताया कि पार्टी होती है जिसमें तोहफ़ों का तबादला (अदला-बदली) होता है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि वहाँ जाकर 'ईसा अल्लाह का बेटा है' के गाने नहीं गाने। वैसे जाना हो तो चले जाएँ। बाकी तो तोहफ़ों का ही तबादला है। आप भी उसकी दोस्तों को ईद पर बुला लिया करें। और हैलोवीन बिल्कुल और चीज़ है, उसकी बिल्कुल इजाज़त नहीं है।

एक वक़्फ़ा-ए-नौ ने सवाल किया कि इस वक़्त जमाअत को सबसे ज़्यादा किन माहिरीन (विशेषज्ञों) की ज़रूरत है?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा तो हमें डॉक्टरों और असातिज़ा (शिक्षकों) की ज़रूरत है।

एक बच्ची ने सवाल किया कि हम बहैसियते जमाअत (समुदाय के रूप में) किस तरह रियल वर्ल्ड मसाइल (वास्तविक विश्व की समस्याओं) को बग़ैर किसी सेंसर के ज़ेर-ए-बहस (चर्चा में) ला सकते हैं? हमें नस्ली इमतियाज़ (नस्लीय भेदभाव) और आइली झगड़ों (पारिवारिक विवादों) और ज़दोकोब (मारपीट) को ज़्यादा वज़ाहत (स्पष्टता) के साथ बयान करना चाहिए। जमाअत के अंदर हमें महसूस होता है कि हम इन मवज़ूआत (विषयों) पर खुल कर बात नहीं करते बल्कि इन मवज़ूआत को छोड़ देते हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप कह रही हैं कि आम तौर पर असरे हाज़िर (वर्तमान युग) के मसाइल जमाअती प्रोग्रामों में ज़ेर-ए-बहस नहीं आते और हम उसे कैसे हल करें? इस्लाम तो नस्ली इमतियाज़ के ख़िलाफ़ है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा-ए-हज्जतुल विदा में वाजेह (स्पष्ट) तौर पर फ़रमाया कि किसी अरबी को किसी अजमी (गैर-अरब) पर कोई फज़ीलत नहीं और न ही किसी अजमी को अरबी पर कोई फज़ीलत है। सो इस्लाम में नस्ली इमतियाज़ की कोई जगह नहीं है।

अगर कोई तअस्सुब (पक्षपात) रखता है तो यह उसका इंफिरादी (व्यक्तिगत) फेअल (कर्म) है। क्या आपने कभी मुझसे या पहले खुलफा से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ऐसा कुछ सना है जिससे नस्ली इमतियाज़ को फ़रोग़ (बढ़ावा) मिले? आपने बैअत (प्रतिज्ञा) खलीफ़ा-ए-वक़्त की है न कि सदरे लजना या सदरे जमाअत या सेक्रेटरी या और किसी जमाअती अहेदार (पदाधिकारी) या किसी जमाअती तanज़ीम की। अगर उनमें से कोई भी ऐसा कर रहा है तो वह ग़लत कर रहा है और ऐसा कोई मुआमला (मामला) मेरे सामने आता है तो मैं सख़्ती से उसका रद्द (खंडन) करता हूँ। अगर कोई ऐसा करता है तो यह उसकी कम इल्मी (अज्ञानता) है न कि जमाअती तालीम।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर कोई पाँच वक़्त नमाज़ नहीं अदा कर रहा तो यह उसका इंफिरादी गुनाह है न कि यह जमाअती तालीम है। अगर जमाअत की सत्तर फ़ीसद तादाद ऐसा नहीं कर रही तो उसका यह मतलब नहीं कि जमाअत उनकी हौसला अफ़ज़ाई कर रही है कि वह नमाज़ न अदा करें बल्कि यह तो उनकी अपनी कमज़ोरियाँ हैं। कोई अपनी कमज़ोरियों को इस्लाम की या जमाअत की तालीम क़रार नहीं दे सकता।

वक़्फ़ात-ए-नौ की यह क्लास सवा आठ बजे तक जारी रही। आख़िर में हज़ूर अनवर ने तमाम बच्चियों को तोहफ़े अता फरमाए।

इसके बाद प्रोग्राम के मुताबिक वक़्फ़ीन-ए-नौ की क्लास हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ शुरू हुई।

वक़्फ़ीन-ए-नौ की क्लास

प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत-ए-कुरआन करीम से हुआ जो अज़ीज़ (आदरणीय) सजील हैदर खान ने की और इसका उर्दू तर्जुमा अज़ीज़ ख्वाजा समर फ़राज़ ने पेश किया और अंग्रेज़ी तर्जुमा अज़ीज़ खालिद हुसैन ने पेश किया।

बाद में अज़ीज़ हिशाम अहमद मलिक ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस-ए-मुबारका पेश की।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहो अन्हु बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम में नबूवत (पैगंबरी) क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा और खिलाफत अला मिन्हाजिन नबूव्वत (पैगंबरी तरीके पर खिलाफत) क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा उस नेमत को भी उठा लेगा। फिर उसके बाद तक़्दीर के मुताबिक ऐज़ा-रसाँ (कष्ट देने वाली) बादशाहत क़ायम होगी (जिससे लोग दिल-गिरिफ़्ता (उदास) होंगे और तंगी महसूस करेंगे)। जब यह दौर ख़त्म होगा तो उसकी दूसरी तक़्दीर के मुताबिक उससे भी बढ़ कर जाबिर (जालिम) बादशाहत क़ायम होगी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और उस ज़ुल्म-ओ-सितम के दौर को ख़त्म कर देगा। उसके बाद फिर खिलाफत अला मिन्हाजिन नबूव्वत क़ायम होगी। यह फरमा कर आप ख़ामोश हो गए।

इस हदीस का अंग्रेज़ी तर्जुमा अज़ीज़ ज़ाफ़िर अहमद ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़ मनीब अहमद ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दर्ज-ज़ैल इक़्तिबास पेश किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रिसाला-ए-वसीय्यत में तहरीर फ़रमाते हैं:

"तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत (शक्ति) का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दाइमी (स्थायी) है। जिसका सिलसिला क़यामत तक मुन्कतिअ (टूटने वाला) नहीं होगा। और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। जैसा कि ख़ुदा का बराहीने अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात की निस्बत (संबंध) नहीं है बल्कि तुम्हारी निस्बत वादा है। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है: 'उस जमाअत को जो तेरे पैरो हैं, क़यामत तक दूसरों पर ग़लबा (विजय) दूँगा।' सो ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताबअ (पश्चात) उसके वह दिन आवे जो दाइमी वादा का दिन है। वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफादार और सादिक़ (सत्यवादी) ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा किया।"

निज़ (इसके अलावा) हज़ूर फ़रमाते हैं:

"मैं ख़ुदा की तरफ से एक कुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम (साकार) कुदरत हूँ और मेरे बाद बाज़ और वुजूद (अस्तित्व) होंगे जो दूसरी कुदरत का मज़हर (प्रकटीकरण) होंगे।"

(रिसाला-ए-वसीय्यत, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 305, 306)

इसके बाद अज़ीज़ उसामा अहमद गुल ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इक़्तिबास का अंग्रेज़ी तर्जुमा पेश किया।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 28 August 2025 Issue No. 35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

पृष्ठ 1 का शेष

में रूहानी दर्जा यह बताया कि वह अमानतों और अहदों की पाबंदी करते हैं अर्थात उनमें ऐसी रूहानी सख्ती पैदा हो जाती है कि ख्वाह उनके पास कोई दुश्मन अमानत रखवाए या कोई मुखालिफ कौम उनके साथ अनुबंध करे वह उसकी पाबंदी करते हैं। किसी किस्म का लालच या कमजोरी उनमें पैदा नहीं होती। गोया हर शख्स जानता है कि वह मौका पर फिर नहीं जाएंगे बल्कि बात के पक्के रहेंगे। जिस्मानी पैदाइश का छठा दर्जा यह बताया कि हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया जाता है। इसके मुकाबले में रूहानी दर्जा यह बयान किया कि वह अपनी और अपनी कौम की नमाजों की हिफाजत करते रहते हैं। अर्थात जिस तरह चमड़े के चढ़ जाने के बाद बच्चा बहुत हद तक जाए होने से महफ़ूज़ हो जाता है, उसी तरह वह लोग जो अपनी कौम में खुदा तआला की इबादत को कायम रखते हैं वह न सिर्फ जाती तौर पर महफ़ूज़ हो जाते हैं बल्कि कौमी तौर पर भी महफ़ूज़ हो जाते हैं। और बजह-ए-कौम के नेक हो जाने के वह बिरूनी असरात से भी उसी तरह महफ़ूज़ हो जाते हैं जैसे चमड़े वाला इंसान बिरूनी असरात से महफ़ूज़ होता है।

जस्मानी पैदाइश में सातवां दर्जा यह बयान फ़रमाया कि जब हड्डियों पर गोश्त और चमड़ा मढ़ दिया जाता है तो हम उनको एक दूसरी पैदाइश दे देते हैं। और वह पैदा हो कर बशर बन जाते हैं। इसके मुकाबले में रूहानी कमाल का यह दर्जा बयान फ़रमाया कि वह मर कर ऐसे इनाम के वारिस होते हैं जो सब इनाम का मजमुआ होता है अर्थात जिस तरह जिस्मानियत में इंसान तमाम जानवरों के कमालात का मजमुआ है उसी तरह रूहानी इंसान मर कर तमाम किस्म की नेमतों के मजमुए को हासिल कर लेते हैं। और जिस तरह मादी इंसान अपनी और अपनी कौम की हिफाजत पर कादिर हो जाता है, रूहानी इंसान की रूहानी हिफाजत का अल्लाह तआला खुद जिम्मा उठा लेता है।

(तफ्सीर-ए-कबीर भाग 6, पृष्ठ 138 से 139, प्रकाशन कादियान 2010)

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय
ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है। ★ ★ ★

बाद में अज़ीज़ अहमद सलाम ने ख़ुशुलहानी (मधुर स्वर) के साथ नज़्म पेश की।

अज़ीज़ हारिस चौधरी ने इस नज़्म का अंग्रेज़ी में तर्जुमा पेश किया।

बाद में अज़ीज़ इक़ान अहमद और ज़ेरक अहमद ने 'खिलाफत की बरकात' के उन्वान पर एक प्रेजेंटेशन दिया।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वक़्फ़ीन-ए-नौ बच्चों को सवालात करने की इजाज़त अता फ़रमाई।

एक वक़्फ़ी-ए-नौ बच्चे ने सवाल किया कि हज़ूर के इस दौरे अमरीका का खुलासा (निष्कर्ष) क्या है? इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब दौरा ख़त्म होगा तो फिर बताऊँगा।

एक वक़्फ़ी-ए-नौ ने सवाल किया कि क़स्र नमाज़ की क्या शराइत (शर्तें) हैं?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि कुरआन और हदीस की रवायत (के अनुसार) जब आप सफ़र में हों, ख़तरे की हालत में हों तो नमाज़ क़स्र की जाती है। हदीस से जो साबित होता है, चौदह दिन तक का सफ़र है तो दो हफ्ते तक नमाज़ क़स्र कर सकते हैं। अगर आप किसी जगह दो हफ्ते के लिए ठहरते हैं तो नमाज़ क़स्र करें, लेकिन अगर प्रोग्राम दो हफ्ते से ज़्यादा ठहरने का है तो फिर क़स्र नमाज़ नहीं है।

एक वक़्फ़ी-ए-नौ बच्चे ने सवाल किया कि अगर अल्लाह तआला हर चीज़ को फ़ौरन बना सकता है तो ज़मीन-आसमान बनाने के लिए छह या सात दिन क्यों लिए?

इसके जवाब में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह हमारे छह-सात दिन नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला के दिन हैं। यह दरअसल मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) मराहिल (चरण) हैं, यह तम्सीली (रूपक) ज़बान इस्तेमाल की गई है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ एक इरतिक़ा (विकास) के अमल (प्रक्रिया) से गुज़ारते हुए बनाई है। आप इरतिक़ा के बारे में पढ़ते हैं। अल्लाह तआला पहले दिन भी अक़्ल दे सकता था, लेकिन अल्लाह तआला की उसी में हिकमत (बुद्धिमत्ता) थी।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह कुफ्फार (काफिरों) ने सवाल किया कि अल्लाह तआला कुरआन करीम को एक दफ़ा (बार) ही क्यों नहीं नाज़िल फरमा देता? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उसकी हिकमत यह है कि ताकि तुम उसकी तालीम को बर्दाश्त कर सको और याद भी रख सको। तो इंसान का इरतिक़ा आहिस्ता-आहिस्ता मरहला वार (क्रमिक रूप से) हुआ है, इसी तरह दुनिया बनी है। पहले ज़िंदगी नहीं थी, आग थी जो कि पानी से ठंडी हुई। फिर एक और प्रोसेस चला। पस (इसलिए) इन मुख़्तलिफ़ मराहिल को दिनों से तशबीह (उपमा) दी गई है, यह नहीं कि हमारे दिन, बल्कि यह तम्सीली ज़बान इस्तेमाल की गई है।

एक वक़्फ़ी-ए-नौ बच्चे ने अर्ज़ किया कि जब हज़ूर खलीफ़ा बने थे तो आपको कैसा महसूस हुआ था? और आप कब से खलीफ़ा हैं?

शेष पृष्ठ 6 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad